अनमोल वचन

सूक्ति संग्रह

Anmol Vachan

Dr. Nirmal Aima
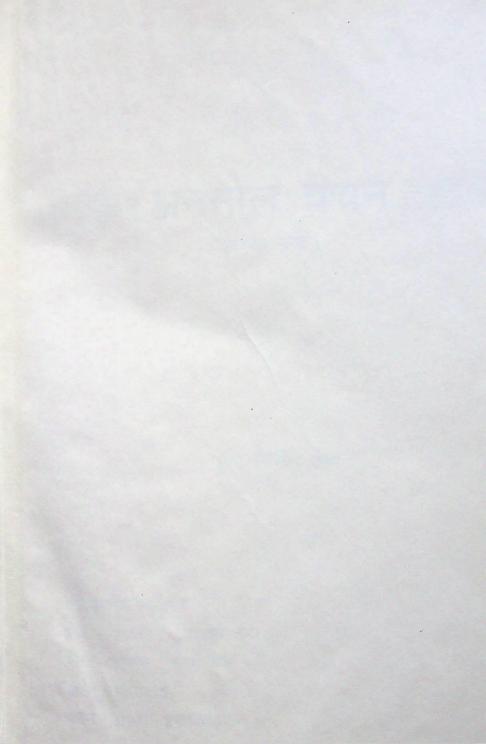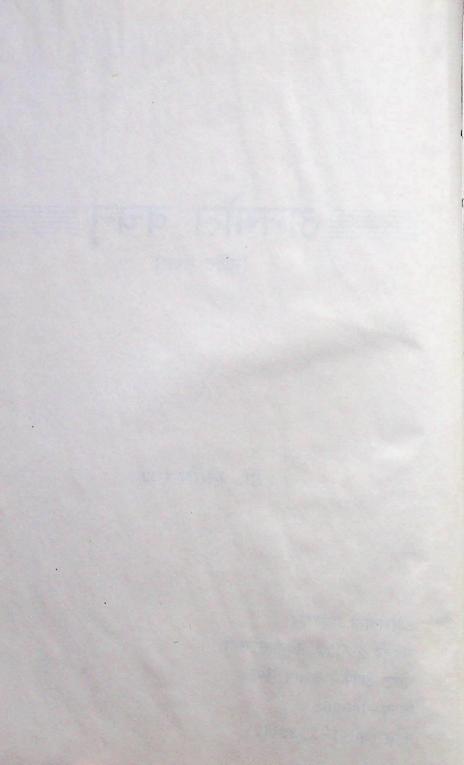
ANMOL VACHAN
(Hand Book of Quotations)

मूल्य : एक सौ साठ रुपये

प्रथम संस्करण	:	नवम्बर, 2005
आवरण पृष्ठ	:	साभार – ओशो वर्ल्ड
प्रकाशक	:	क्षीरभवानी प्रकाश सैक्टर 2/122, विकास नगर पोस्ट आफिस सुभाष नगर जम्मू – 180005 फोन : 0191 – 2535142
मुद्रक	:	जोगी प्रिंर्टज़ जोशी गली चौक, मण्डी, गुरदासपुर । फोन : 01874 – 394477 मोबाईल : 98147 – 31504

समर्पित

जिन्हें गुरुजनों प्रति श्रद्धा
आप्त वचनों पर है आस्था
मानवता से जिनका वास्ता
सच्चाई का पथ ही रास्ता

निर्मल

आत्म निवेदन

एक बूँद स्याही बनती रोशनाई
विचार प्रभु की सौगात न्यारी

विचार सूक्ष्म स्तर का कर्म है तथा हर कार्य का मूल रूप विचार ही है। मानव जीवन ईश्वर का श्रेष्ठत्तम उपहार है, जो विशिष्ट क्षमताओं को लेकर जन्म लेता है। इन क्षमताओं को मौलिकता में अद्धितीय स्थान देना ही जीवन की सार्थक सफलता है तथा इनकी अभिव्यक्ति में जीवन की पूर्णता। इससे न केवल उसका मन शाँत एवं तृप्त होता अपितु परिवेश, समाज एवं समुदाय भी धन्य होता।

उचित व्यक्तित्व के निर्माण में संजीवनी का कार्य करने वाली यह सूक्तियाँ मानव अन्तराल में प्रकाशपुंज की ऐसी रश्मियाँ प्रदीप्त करती है; जिससे मन एवं मस्तिष्क एक साथ आलोकित होते हैं। स्वस्थ दृष्टिकोण ही अन्तर्तम की पीड़ा को दूर करने में सक्षम तथा सद्-वृत्तियों को पथ-प्रदर्शित्त कर सकता है। इन विशेष गुणों के कारण ही विद्यालयों एवं मीडिया के विविध माध्यमों द्वारा प्रतिदिन किसी न किसी रूप में इनका प्रयोग शिक्षा हेतु किया जाता है।

भविष्य की आधार शिला छात्र जीवन में यदि संस्कारों के उचित बीज रोपे जाएं तो जीवन के उपवन में उपलब्धियों के अनेक सुसुगंधित सुमन विकसित होंगे, जिन्हें चुनते समय उपयुक्त दिशा निर्देशकों के अभाव में भी उनके विचार पथ-प्रदर्शक बनकर हमें उचित राह दिखवाते हैं।

युग ऋषियों, वेदमूर्तियों, महानुभावों, परमपूज्य गुरुदेवों, प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के धनी मनीषियों एवं लब्ध आचार्यों के आप्त वचनों का जहाँ मैंने सम्पादन किया है, वहाँ साहित्य की किसी विधा से या जीवन की किसी घटना के अनुभूत सत्य को भी अभिव्यक्ति दी है। सूक्तियों के रचनाकारों के नाम न देने के कारण क्षमाप्रार्थी हूँ। वास्तव में **'किसने कहा'** से अधिक **'क्या कहा'** अधिक विचारणीय है। रोशनी पूर्व या

पश्चिम किसी भी दिशा से आये **प्रकाश** तो **प्रकाश** है । मुख्य है हमने क्या प्राप्त किया । **सत्य** का पर्याय तो **सत्य** ही है, जो जाति, देश व काल से परे है ।

शिक्षा कहीं से भी ग्रहण करके बहुमुखी भौतिक विकास के लिए उत्तरदायी है परन्तु विद्या की रोशनी मानव के अन्त:क्षेत्र को परिशोधित एवं परिष्कृत करके सुसंस्कारी, श्रेष्ठ, शालीन एवं सद्‌विचारों से सम्पन्न कराके मानवता का पाठ पढ़ाती है । स्थाई मनोभावों प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, परोपकार, वीरता आदि के साथ-साथ आत्मविश्वास, आत्मबल एवं आत्मनिर्भरता की चिनगारी भी प्रस्फुटित करती है । जिसका केन्द्र बिन्दु है '**विचार**' । विचार-प्रवाह को सुनियोजित करके लक्ष्य की प्राप्ति सुगम हो सकती है; अभिव्यक्ति का माध्यम् एवं शैली चाहे कोई भी हो ।

अंग्रेजी भाषा में अधिक सूक्तियाँ इसलिए छापी हैं ताकि छात्र चिन्तन, मनन एवं अनुवाद करने में प्रवीणता प्राप्त कर सकें । हिन्दी भाषा हमारी अपनी भाषा है अत: इसमें हम विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकते हैं ।

कनिष्ठवर्ग के छात्रों में आत्मनिर्भरता का गुण पनपने हेतु छोटी-छोटी सूक्तियाँ एवं शब्दार्थ दिए गए हैं ।

छात्रों के आग्रह पर वन्दना, हाइकु संग्रह, 'धरा के लिए', रचयिता डॉ० निर्मल ऐमा प्रकाशन क्षीरभवानी में से ली गई है ।

विचारक पाठकों से मेरी सादर अनुनय है कि अपने विचार सूचित करने की कृपा करें । संशोधन हेतु आपके परामर्श का उदार भाव से स्वागत है ।

छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के हेतु मंगल कामनाओं के साथ.........

विनीत

निर्मल

माँ शारदे माँ शारदे,
विनती करें कर जोड़ के ।

विद्यावती वाग्गेश्वरी,
मिटा अज्ञान अहं नाशिनी ।
तम दूर कर आलेक दे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

कमलासन हो ब्रह्माणी,
आये शरण हे भवानी ।
कण कण में माँ उजास दे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

मोक्षदानियनी हो सरस्वती,
परिपूर्ण माँ संतोषी ।
जग को प्रज्ञा से नहला दे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

करुणानिधि हो वीणावादिनी,
सुधा छलकाती रागिनी ।
हो शाँत प्यासे प्राण मेरे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

हंसारुढ़ वीणाधारिणी,
विवेक जगा दो कल्याणी ।
उज्ज्वल आँचल फैला दे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

सप्त सुरों से गरिमामयी,
विश्व पुकारे ममतामयी ।
सत् - चित् आनंद का वर दे,
विनती करें कर जोड़ के ।।

माँ शारदे माँ शारदे,
विनती करें कर जोड़ के ।

"सूक्तियों में नीति के वचन थोड़े शब्दों में गागर में सागर की भाँति बड़ी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं । इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है । ये भावों को सजा-संवार कर सजीव बनाने एवं वक्तव्य कला को चमकाने में बड़ी सहायक होती हैं ।"

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

1. बूँद स्याही बनती रोशनाई
विचार है प्रभु की सौगात न्यारी

2. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है ।

3. खामोशी हमारे पवित्र विचारों का मंदिर है ।

4. समस्याओं से भागने का अर्थ समस्याओं से छोटा रह जाना या कायर बनना । समस्या रूपी पत्थर को हम सोपान बनाकर ऊँचाई प्राप्त कर सकते है ।

5. भविष्य का अतीत के साथ गहरा सम्बन्ध है, जिसका आधार वर्तमान है ।

6. अधिकार की अपनी एक मर्यादा होती है । उस मर्यादा की रक्षा हेतु अधिकार प्रयोग को संयत रखना आवश्यक है ।

7. किसी भी वस्तु में अति उचित नहीं । अति से जो प्रतिक्रिया पैदा होती है उसका रुख विपरीत दिशा की ओर होता है । चाहे वह मौसम हो, शासन हो या ज्ञान ।

8. जन्म से अंधा देख नहीं सकता, काम से अंधे को सूझता नहीं । मदोन्मत्त किसी को मानता नहीं पर स्वार्थी दोषों को भी नहीं देख सकता ।

9. आलसी को सदा असन्तोष रहता है ।

10. जिस मानव की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के समीप होता है ।

11. बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता का महाशत्रु आवेश है ।

12. जिसकी आत्मा में बल नहीं, स्वाभिमान नहीं, वह चाहें कुछ भी हों, पर आदमी नहीं है ।

13. नदी, हवा, वृक्ष प्रकृति के दूत बनकर मानव को जीवन का ध्येय समझाते हैं । नदी दूसरों की प्यास मिटाती, हवा दूसरों को जीवन देती, वृक्ष अपने को समर्पित करके मानव को जीवन-मोल की ओर इंगित करते हैं ।

14. अज्ञान के समान दूसरा बैरी कोई नहीं है । इसको ज्ञान ही मिटा सकता है ।

15. सत्य की उचित जिज्ञासा करते हुए, उसका श्रद्धापूर्वक सही समाधान खोजने की चेष्टा ही उपासना है; जो सही पूर्णता का आधार है ।

16. अत्याचार क्रूरता एवं दुर्बलताओं से पनपते हैं ।

17. वह शासक अत्याचारी है जो स्वेच्छा के अलावा कोई नियम नहीं जानता ।

18. दूसरों की मदद किए बिना, हम अपनी मदद नहीं कर सकते; दूसरों को फायदा पहुँचाये बिना, हम अपने को फायदा नहीं पहुँचा सकते तथा दूसरों को खुशहाली दिलाए बिना, हम खुद खुशहाल नहीं हो सकते ।

19. मानव जीवन एक उद्देश्य है, उस उद्देश्य को खोजना और पाना ही वास्तव में जीवन है ।

20. सूर्य केवल परछाइयाँ नहीं बनाता अपितु उजास और ऊर्जा भी देता है ।

21. ईर्ष्या जिन्दगी के आइने में दरारें डालती है ।

22. गुठलियों के डर से कोई आम खाना नहीं छोड़ता ।

23. उचित विषय से उचित विचार को बढ़ावा मिलता है तथा आदमी मानव बनता है ।

24. अश्लीलता जहाँ समाज को बर्बाद करती है वहाँ राष्ट्र को डुबो देती है ।

25. क्रोधित व्यक्ति में स्व-अनुशासन की कमी होती है ।

26. हर कार्य आसान होने से पूर्व कठिन होता है । इसकी कठिनता साहस हर लेता है ।

27. शाँत समुद्र में नाविक कभी कुशल नहीं बन पाता ।

28. असफलता सफलता का मार्ग इंगित करती है तथा दृढ़ संकल्प ही, साहस और धैर्य का प्रशस्त पग प्रेरित करता है ।

29. जिसकी कथनी और करनी में हो अन्तर,
सफलता हो जाती वहाँ से छू-मन्तर ।

30. कर्त्तव्य जब कामना बन जाए तो संतोष और सुख के आनन्द का अनुभव हो जाता है ।

31. आपसी द्वेष भाईचारा खा जाती,
तृष्णा मानवता निगल जाती ।

32. जीत रूपी सिक्के के दो पहलू यदि उदारता और संयमता है तो सिक्का खरा है, नहीं तो खोटा ।

33. ईमानदारी यदि फूलती नहीं फलती अवश्य है ।

34. सफलता और समझदारी मिलती तो परिश्रम से है परन्तु सफल जीवन की नींव भी यही है ।

35. कठिनाइयों को झेलने वाला ही मरने से स्वतन्त्र है ।

36. संसार में कुछ भी मुफ्त में नहीं मिलता, समय का मोल तो चुकाना ही पड़ता है, यह आप की इच्छा है कि आप क्या खरीदना चाहें ?

37. दूसरों की गलतियों से सीखने वाला ही वास्तव में विवेकी है ।

38. नम्रता सबके साथ रखें मगर नज़दीकी बहुत कम के साथ तथा उन पर भी भरोसा करने से पहले उन्हें अच्छी तरह परख लें ।

39. दुनिया हमें वैसी नहीं दिखती जैसी वह है अपितु वैसी दिखती है जैसे हम हैं ।

40. अहंकार ईर्ष्या और असंतुष्टि देता है जबकि गर्व आनंद व संतुष्टि ।

41. ज़िम्मेवारियाँ उस व्यक्ति की ओर खिंची चली जाती हैं; जो उन्हें कंधे पर उठा सकता है ।

42. महानता की कीमत जिम्मेदारी है ।

43. 'क्या ठीक है' ? यह विचारनीय है न कि 'कौन ठीक है'?

44. एक बार धोखा खाना इतिफाक हो सकता है, दूसरी बार धोखा खाना बेवकूफी है ।

45. सहानुभूति दर्शाने से सहानुभूति का होना अच्छा है ।

46. मानव के व्यवहारों में ज्वार-भाटा का सा उतार-चढ़ाव होता है; यदि उसका व्यवहार सम हो जाए तो वह गरिमामय सागर सम बन जाए ।

47. भक्त का हृदय प्रभु की बैठक है ।

48. कामना का त्याग ही उत्तम तप है ।

49. कर्म फल है, शब्द पत्तियाँ ।

50. आलस्य आशा को छीनता है । इसमें शाश्वत निराशा का वास है ।

51. आहार की शुद्धि से अन्त:करण की शुद्धि सम्भव है ।

52. विवेक का आधार, इन्द्रियों पर अधिकार होने पर निर्भर है ।

53. सुख-दुख जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये,
जो बिन श्रम के कुछ भी न चले ।

54. ज़माने में उसने बड़ी बात कर दी
जिसने अपने आप से मुलाकात कर ली ।

55. शाश्वत केवल प्रभु है और कुछ नहीं ।

56. विचारों की स्वतन्त्रता, धार्मिक स्वतन्त्रता, अभावों से स्वतन्त्रता तथा भय से स्वतन्त्रता को वह व्यक्ति प्राप्त कर सकता है; जिसकी आत्मा पर कोई बोझ न हो ।

57. धर्म व शिष्टाचार के अनुकूल चलना सदाचार है परन्तु रूढ़िवादी बनकर देश व समाज की प्रगति में बाधक बनना असदाचार है ।

58. कानों की शोभा शास्त्र श्रवण तथा सत्य वचन से है न कि आभूषणों से ।

59. प्रयास के बिना योजना नहीं, श्रम के बिना प्रगति नहीं ।

60. आलस्य एक प्रकार की हिंसा है । विपत्ति में साहस ही परम् मित्र है ।

61. यदि भय नहीं होगा तो घृणा भी नहीं होगी ।

62. अपनी अज्ञानता का आभास ही बुद्धिमता का प्रथम सोपान है ।

63. बिना उत्साह के महान ध्येय की प्राप्ति नहीं होती ।

64. आनन्द रूपी पुष्प तो मुरझाता है पर याद शाश्वत सुगंध है ।

65. डरना और डराना दोनों पाप है ।

66. देशद्रोही सबसे बड़ा पापी है; तथा मानवता का हिंसक सबसे बड़ा अपराधी ।

67. धैर्य सन्तोष की कुंजी है ।

68. अन्धीश्रद्धा अज्ञान है । ज्ञान वही है जो मुसीबत में काम आए ।

69. अपने अवगुण अपने को ही दुःख देते हैं ।

70. मानव अहं से बहुत प्रेम करता है; इसलिए वह अपने दोष देखना पसन्द नहीं करता । जिस क्षण अहं से उसका मोह टूट जाएगा, वह चेतना के द्वार पर खड़ा होगा ।

71. सुन्दर रूप, चाहे सुन्दर मूर्ति या सुन्दर चित्र की अपेक्षा उच्चकोटि का हर्ष प्रदान करता है; परन्तु सुन्दर आचरण सभी कलाओं में श्रेष्ठ कला है ।

72. आत्मा को जानना है, प्रभु की शरण में जाना ।

73. संसार में न कोई मित्र है न कोई शत्रु, वास्तव में यह तो मन का अस्थाई निर्णय है ।

74. सीमित इच्छाएं सर्वोच्च परिणाम पर ले जाती हैं ।

75. सर्वोत्तम मार्गदर्शक अपनी अन्तरात्मा है ।

76. सफलता की आत्मा 'नियमबद्धता' है ।

77. अपना सबको मानो, विश्वास कुछ पर करो, बुरा किसी को न कहो ।

78. कामना का त्याग ही उत्तम तप है ।

79. अभिमान अज्ञानता का बीज है ।

80. निर्मल अंत:करण की वाणी आत्मा की आवाज़ है; जो सत्य प्राप्ति का साधन है ।

81. दीपक सम अंत:करण वास्तविकता एवं दिव्यदृष्टि, दोनों को प्रकाशित करता है ।

82. अपने दोष ढूंढ निकालना ज्ञान वीरों का काम है ।

83. जैसे शीशे के स्वच्छ एवं स्थिर रहने पर ही रूप प्रतिबिम्बित होता; इसी प्रकार शुद्ध मन में ही प्रभु का स्वरूप दिखाई देता है ।

84. शुद्ध अन्त:करण प्रभु के अमृत पात्र की रक्षा करने का आगार तथा उसकी उपस्थिति का प्रमाण है ।

85. अंधकार व अज्ञानता प्रकाश की ओर चलता है जबकि तृष्णा एवं स्वार्थ का अंधापन विनाश की ओर ।

86. अकृतज्ञता मानवता का हलाहल है ।

87. प्रकृति अपनी प्रगति और विकास के प्रति प्रतिबद्ध है इसलिए अपना अभिशाप हरेक अकर्मण्यता पर थोपती है ।

88. सूर्य एवं चांद अकेले होकर भी अपनी किरणों से समस्त संसार को प्रकाशमान करते हैं, जबकि अकेला मानव ही स्वशक्ति पर भरोसा करता है ।

89. अपनी ही अज्ञानता के संबंध के अज्ञात होने के समान और कोई अज्ञान नहीं ।

90. अज्ञानता अहंकार का जन्मदाता तथा संतापों का मूल है ।

91. अज्ञानी, साधक होकर भी अपने विकारों को विजित नहीं कर सकता, जिस प्रकार वीर होने पर भी एक अंधा शत्रु सेना को पराजित नहीं कर सकता ।

92. अज्ञान की अवस्था में सर्वस्थ खो जाने पर भी वेदना सोई रहती है ।

93. कुत्सित वचन 'अवचन', कुत्सित शील 'अशील' तथा मिथ्यादृष्टि का ज्ञान कुत्सित होने के कारण अज्ञान कहलाता है ।

94. जड़ विषयों में रुचि, सुख तथा आत्मस्वरूपता की प्रसिद्धि ही अज्ञान है ।

95. अज्ञान मन की वह शिक्षा है जिसमें न तो चन्द्र है न नक्षत्र ।

96. अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं परन्तु अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है ।

97. अज्ञान, डर एवं हठधर्म की माता है ।

98. अपनी विद्वता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है ।

99. स्नेह, ज्ञान, सुन्दरता कभी अति से नहीं अपितु गुण पूर्णतया के शुद्ध अर्थ से समझे जाते हैं ।

100. अति सौन्दर्य के कारण सीता चुराई गई, अति गर्व के कारण हठी रावण मारा गया, अति दान के कारण राजा बलि को पाताल लोक जाना पड़ा; अतः अति के अहं से दूर रहना ही अच्छा है ।

101. अग्नि स्वर्ण को परखती है, आपत्ति वीर को, इनको पराजित करना ही जीवन के आनंद की पराकाष्ठा है ।

102. आवरण ढकता है; रूप व कुरूपता ।

103. एक आपत्ति अनेक आपत्तियों की जननी होती है ।

104. मधुर वाणी मानव का ऐसा आभूषण है जो बिना घिसे पल-पल मानव के रूप में वृद्धि करता है ।

105. धर्म की कमाई में शक्ति एवं शाँति होती है ।

106. कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो निर्धन हो जाए

107. ऐश्वर्य का गुण भूषण सजाना, शूरता का वाणी पर संयम, ज्ञान का शांति, कुल का विनय, धन के लिए सुपात्रता, तपस्वी का अक्रोध, शक्तिशाली का क्षमा, धर्म का निच्छलता; इन सब गुणों का आभूषण है..............सुशीलता ।

108. साहस में प्रतिभा और शक्ति में जादू है । निष्ठा लग्न से कार्य में जुट जाने से मन में वेग आ जाता है और कार्य निपट जाता है ।

109. आलस्य, दरिद्रता और दु:खों की कुंजी है । इसका रोगी कभी नहीं संभलता ।

110. अंसतोषी होना अपने ऊपर अविश्वास का फल है । जो निर्बल इच्छा का रूप है ।

111. धारणा को भ्राँति में परिवर्तित करने वाला संदेह है; जो विश्वास और अविश्वास के मिलन बिन्दु पर उपजता है । यदि इन दोनों का स्थान निश्चित किया जाए तो सन्देह उत्पन्न नहीं होता ।

112. जहाँ हमें अपने विचार, व्यवहार को पल-पल परखना चाहिए वहीं हम औरों के प्रति सजग होते हैं । वास्तव में संदेहास्पद मन हमें भीतर झाँकने का अवसर नहीं देता ।

113. अवसर का चेहरा घूँघट में छिपा और इसमें पाँव के बदले पंख होते हैं, जिसका अर्थ है यह रुकता नहीं तथा किस रूप में आएगा दिखता नहीं ।

114. वाणी शक्ति है इसका कुशल उपयोग करने वाला शक्तिशाली हैं ।

115. परमात्मा का प्रवेश द्वार अति निकट है, केवल चक्षु से परदे हटाने की देर है ।

116. संकल्प, विकल्पों के पार होता है; इसका अर्थ है बस यह और कुछ भी नहीं ।

117. बुरे कर्म हमें अपराध बोध से भर देते हैं, जिससे अचेतन में गाँठ बन जाती है तथा स्वाभिमान साँस नहीं ले पाता ।

118. बल्ब पर धूल की परतें जमने लगें तो रोशनी धुँधली हो जाती है; अतएव विद्यार्थी पर यदि आलस्य व कुतर्कों का आवरण चढ़ेगा तो निखरेगा कैसे ?

119. सत्य तर्क और विकल्प से परे है, जहाँ हमें इसका आभास हो वही इसका प्रारम्भ बिन्दु है ।

120. आनंद एवं विकास का स्त्रोत हमारे भीतर है, जिसे पाने का श्रम हमें स्वयं करना है ।

121. संदेह यदि सोच में नहीं सोद्देश्य क्रिया में आ जाए तो यह अभिशाप नहीं वरदान बन सकता है ।

122. प्रबल अंत:करण, अनुशासित मन एवं सुव्यवस्थित विवेकशील पग जिस पथ पर चल रहें हो; वह पथ सत्य का ही है ।

123. असफलता अन्यमनसकता का दुष्परिणाम है । जो एकाग्रता तथा मनोयोग पूर्वक गंभीर चिन्तन के अभ्यास से दूर हो सकता है ।

124. अपने कार्यक्षेत्र की छोटी - छोटी कमियों पर ध्यान देने का अर्थ है - - सफलता में एक-एक तन्तु जोडना ।

125. अनुभवों का गंभीरता पूर्वक संचय करने का अर्थ है अपनी प्रतिभा को प्रखर करना ।

126. आलोक दिव्य एवं पावन होता है, इससे पथ प्रदर्शित होता है, यह सम्भव तभी है जब चक्षु खुली हो ।

127. जीव - आत्मा शरीर से अभिव्यक्ति पाती है और व्यक्तित्व चरित्र से । चरित्र व्यक्ति के गुणों का समुच्चय है, जो व्यक्तित्व का निर्माण करता है ।

128. गुणों के कोमल, महीन एवं अति संवेदनशील रेशों से व्यक्तित्व की बनावट होती है । जिसके मूल में संस्कार होते हैं ।

129. निर्माण की प्रक्रिया लम्बी एवं दुष्कर होती है, जिसके संयम एवं धैर्य दो हाथ हैं ।

130. सेवा और सज्जनता साधना रूपी शक्ति के अंग हैं ।

131. निजी लाभ से चाहे सम्पति कमाई जाए या यश; उस की चर्चा भर हो सकती है, अभ्यर्थना नहीं ।

132. संसार-सागर से पार होकर अमृत्व तक पहुँचने का सही एक सेतु आत्मा है।

133. सूर्य का प्रकाश भिन्न -भिन्न घरों में जा कर भी समान रहता है, उसी प्रकार ईश्वर की महान आत्मा पृथक-पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होती ।

134. आत्मा को आत्मा की ही आवाज़ जगा सकती है ।

135. आत्मा पर विजय पाने का अर्थ है; कामना एवं कुवृत्तियों को रोकना ।

136. आत्मा की कीमत देकर यदि स्वर्ग भी प्राप्त हो जाए तो वह नरक से अधम और धूल से नगण्य है ।

137. आत्मीयता मिलाती है, जबकि अहंता दूर करती है ।

138. आदत रस्सी के समान है । जिसमें यदि प्रतिदिन हम एक-एक बल भी देते हैं तो अन्त में इसे तोड़ नहीं सकते । अभ्यास से इसमें परिपक्वता आती है ।

139. नीम, गुड़ के साथ खाने पर भी कड़वाहट नहीं छोडती । अतः नीम को अलग रखने में ही समझदारी है; इसी प्रकार बुरा व्यक्ति सज्जनों के साथ रह कर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता ।

140. सृष्टि के सभी सौन्दर्यों की अग्रणी आत्मा है ।

141. जो अपनी आत्मा का भला नहीं कर सकता; वह किसी का भी भला नहीं कर सकता, तथा उसका भला देवता भी नही कर सकते ।

142. कार्य करके यदि हमें धन और लोगों की मान्यता मिले तो समझों मजदूरी पूरी नहीं मिली, बहुत सस्ते में हमारा श्रम गया, पूरी मजदूरी का मिलना तब माना जाए जब उससे अपने आप में सुधार हो ।

143. जो आप से असहमत है ।
क्या आप उनको सहन कर पाते ?
जो आप को पसन्द नहीं करते ।
क्या आप उनके प्रति सद्भाव रखते है ?
जहाँ आप को बुराई ही बुराई दिखती है ।
क्या आप वहाँ अच्छाई खोज पाते ?
यदि आप का उत्तर हाँ है तो आप प्रभु का कहना मान रहे हो ।

144. वाणी सभी व्यवहारों की जड़ है, यदि इसमें स्वच्छता और स्वस्थ्ता आ जाए तो वातावरण सुगन्धित हो जाए ।

145. कोई आदमी न आलसी होता, न कमजोर, वास्तव में मिले हुए कार्य में उसकी रुचि नहीं होती ।

146. शिक्षा के परिणामों को जीवन में उतारने के लिए बोलना और सुनना उतना ही जरूरी है जितना चित्र बनाने के लिए 'कैनवास' और 'ब्रश' ।

147. युग-निर्माण एवं क्राँतिकारी घटनाएँ दोनों ही वाणी का उपहार है।

148. आत्मा दृष्य नहीं श्रव्य है। इसकी अवाज सुनने का सामर्थ्य होना चाहिए ।

149. भय के कारण भीड़ मे खो जाने से अच्छी खुद की संगति है, जो वास्तविक सम्पत्ति है ।

150. शिक्षित वह है जो बीते कल के काम से आज का कार्य अच्छा बनाए तथा आने वाले कल के काम को उत्तम बनाने की योजना बनाए ।

151. संयम की जननी भय है ।

152. वाणी में समझ प्रभुता से आती है ।
प्रभुता समझ से ।
समझ मानसिकता और कौशल से ।

153. सही सुनना, सही बोलना
सही बोलना, सही समझना
सही समझना, सही सोचना
सही सोचना, सही करना
सही करना, मानव बनना
मानव बनना, जीवन जीना
इस प्रकार सफल जीवन जीने का आधार जहां सही सुनना है वहाँ सही सुनने हेतु **ध्यान** सर्वोपारि है ।

154. वह सबसे बड़ा दीन-दुर्बल है, जिसको अपने ऊपर नियंत्रण नहीं ।

155. सभ्यता का स्वरूप सादगी है ।

156. हर व्यक्ति संसार में महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है । अतः दूसरों के साथ वह व्यवहार न करें, जो हमें स्वयं के लिए पसन्द नहीं ।

157. जीवन का अर्थ वास्तव में समय है । जो जीवन से प्यार करते हैं, वे आलस्य में समय नहीं गँवाते ।

158. आलस्य से बढ़कर अधिक घातक और अधिक समीपवर्ती शत्रु दूसरा नहीं ।

159. सज्जन अमीरी में गरीब जैसे विनम्र और गरीबी में अमीर जैसे उद्धार रहते हैं ।

160. मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता तथा स्वामी है ।

161. मनुष्य का जन्म तो सहज होता है पर मनुष्यता कठिन परिश्रम से प्राप्त होती है ।

162. प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं - अवश्यकताएँ कम हों और परिस्थितियों से हम तालमेल बिठाएँ ।

163. सार्थक और प्रभावशाली उपदेश वह है जो वाणी से नहीं आचरण से प्रस्तुत किया जाए ।

164. असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ है ।

165. पीड़ा तन्हा तथा आनन्द जुड़वा उत्पन्न हुआ है इसलिए किसी दूसरे को अपना सुख दिखाए बिना हृदय गर्व का अनुभव नहीं कर सकता ।

166. आनन्द स्वभावत:मुक्त है । इसका न ही ज़ोर चलता न ही हिसाब । इसकी पूर्ति सौन्दर्य से दृष्टिगत होती है ।

167. फूलों की दोस्ती से काँटों की दोस्ती अच्छी है । जो हमें कठिन रास्ते पर चलने की प्रेरणा देती है ।

168. जो खुशी कल दुख देने वाली हो, उसे आज ही त्याग देना अच्छा है ।

169. जिस व्यक्ति ने कल्पना के महल नहीं बनाए, उसे वास्तविक महल की उपलब्धि कभी नहीं हो सकती ।

170. आत्मा के लिए प्रार्थना उतनी ही अनिवार्य है, जितना शरीर के लिए भोजन । यह मानवीय प्रयत्नों में ईश्वरत्व का सुन्दर समन्वय है ।

171. प्रार्थना आत्मा की आध्यात्मिक भूख, आत्मशुद्धि का आवाह्न तथा आत्मविकास का पहला पायदान है । इससे आत्मसत्ता में परमात्मा का सूक्ष्म दिव्य तत्त्व झलकने लगता है ।

172. जीवन में कोई किसी से इतना धोखा नहीं खाता जितना कि वह अपने आप से खाता है ।

173. मजबूर की मजबूरी में सहायता करना ईश्वर की अर्चना है ।

174. धर्म का आचरण करने वाले शान्ति के निकट होते हैं ।

175. सच्चा अधिकार सेवा व त्याग से ही मिलते हैं । इससे न केवल सौभाग्य प्राप्त होता है अपितु इससे आत्मा भी पवित्र होती है ।

176. आत्मज्ञान मन को आनंद देने में सक्षम है ।

177. व्यवहार कुशलता ही सफलता की कुंजी है ।

178. वाणी पर संयम रखने का अर्थ है; आत्मा को संतापों से बचाना ।

179. मन को हर्षित एवं उल्लासमय रखने का अर्थ है; परेशानियों को पीछे धकेलना ।

180. संसार रूपी वाटिका में फूल ही फूल हैं, हमारा भ्रम ही एक काँटा है ।

181. मानव का दानव होना उसकी हार है, महामानव होना उसका चमत्कार, मानव होना ही उसकी जीत है ।

182. भूख की आग ऊँचे से ऊँचे और कोमल से कोमल हृदय के व्यक्तियों को भी नीच कार्य करने पर भी विवश कर देती है ।

183. मौन अज्ञानता नहीं शक्ति का हथियार है ।

184. पर-निन्दा, आत्म-उत्थान का द्वार बंद करती है ।

185. उद्यम से अपना मानव का कोई मित्र नहीं है ।

186. परिश्रम सफलता की कुंजी है और आलस्य असफलता का द्वार ।

187. सुख की अभिलाषा ही हमारे दुःख का एक अंश है ।

188. आश्चर्य एवं आवेश महान संकल्पों के जन्मदाता हैं ।

189. वैभव तन की कुरूपता ढक सकता परन्तु मन की नहीं ।

190. आवश्यकता तर्क के सम्मुख नहीं झुकती । यह जहाँ अविष्कार की जननी है, वहाँ प्रतिभा को भी प्रोत्साहित करती है ।

191. आदर्शवादी के लिए आनंद स्वप्न बन जाता है ।

192. विचार या भाव ही मानव को उत्तेजित करते हैं, जो कार्य करने के लिए ऊर्जा का काम करते हैं ।

193. ऊँचे आदर्श जो उड़ान से प्राप्त किये जाते हैं, वह संसार रूपी मार्ग के पथ-प्रदर्शक होते हैं, जिनका निर्वाह एक संयासी ही कर सकता है ।

194. सुन्दरता आनंद प्रदान करती और आनंद सत्य का आभास ।

195. सुख आनंद नहीं देता जबकि दुःख आनंद का द्वार खोल सकता है ।

196. पीड़ा को हम स्वयं भी सम्भाल सकते हैं किन्तु आनंद का भार बाँटनें के लिए साथी की आवश्यकता पड़ती है ।

197. माँगने का अर्थ सदा लेना नहीं है; कभी हम कुछ देकर भी अपने लिए खुशी माँगते हैं ।

198. आदर्श के पथ पर चलने वाला अपने 'स्व' रूपी रथ को और मजबूत बनाता है । आस्था और श्रद्धा उसके दो पहियें बन जाते हैं ।

199. प्राय: तीन साल की आयु में संकल्प शासन करता है । तेरह की आयु में बुद्धि और तीस में विवेक ।

200. एक झूठ अनेक झूठों को जन्म देता है तथा एक विपत्ति अनेक विपत्तियों को । इसलिए आपत्तियों को पराजित करना ही समय का सदुपयोग करना है ।

201. हल्की आँच भी शीतल पानी में उबाल लाता है, अत: थोड़ा क्रोध भी अशान्ति को न्योता देता है ।

202. सुख एवं आनंद ऐसे इत्र हैं, जिन को बाहर छिड़कने से भीतर महक उठता है ।

203. आनन्द गणित नहीं कला है, जो सात रंगो को मिला कर भी एक रंग बनाती है ।

204. धैर्य कल्पना को भी साकार कर सकता है; साहस में वह जादू है ।

205. कोई भी कार्य आरम्भ करना जितना संघर्षमय है; उतना उस कार्य को अंजाम देना नहीं ।

206. दूसरों के दोषों को निकालने का तात्पर्य है; अपने ही समय एवं उत्थान का 'स्वाहा' करना ।

207. आराम उन शहीदों के प्रति विश्वासघात है, जो स्वतन्त्रता का दीप सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए हमें दे गए । उस लक्ष्य के प्रति बेवफाई जिसे हम ने प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की है, उन के प्रति बेइन्साफी जो एकता हेतु कभी आराम नहीं करते । (पं० जवाहर लाल नेहरू)

208. जिस प्रकार दीपक दूसरी वस्तुओं के साथ अपने स्वरूप को भी प्रकाशित करता है; उसी प्रकार अंतःकरण दूसरी वस्तुओं को भी प्रत्यक्ष करता है और अपने आपको भी ।

209. जब तक अंत:करण शुद्ध एवं पापरहित नहीं होगा, तब तक वास्तविक दृष्टि से दिव्य – दृष्टि का उदय नहीं होगा ।

210. कोई साथी इतना निकट और कोई वक्ता इतना शक्तिशाली नहीं है, जितना कि अपना ही अंत:करण ।

211. अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन विनाश की ओर ।

212. हमें केवल अकर्मण्यता से ही भयभीत होना चाहिए ।

213. अकृतज्ञता इंसानियत के प्रति धोखा है ।

214. विश्व में सर्व – शक्तिशाली मानव वही जो अकेला रहता है ।

215. जो अकेले चलते है, वे शीघ्रता से बढ़ते है । अकेला विचरणा अच्छा है, परन्तु मूर्ख साथी अच्छा नहीं ।

216. अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है, जिसके रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है ।

217. भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन हमारा पथ प्रदर्शित करता है ।

218. अत्याचार करने वाले भूल जाते है, किन्तु जिन पर अत्याचार होता है वे आसानी से नहीं भूल सकते । हाथ से लाठी गिर जाने पर भी वे मन ही मन में द्वेष की भावना रखते हैं ।

219. अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम खुली चुनौती है, जिसे वीर पुरुषों को स्वीकार करना ही चाहिए ।

220. सारे अत्याचार कूरता एवं दुर्बलताओं से पनपते है ।

221. जब प्रजा सिद्धान्त के लिए विद्रोह करती है, तब राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है ।

222. अत्याचारी से बढ़कर भाग्यहीन कोई नहीं है, क्योंकि आपदा के समय उसका कोई सखा नहीं होता ।

223. स्वयं को न्यायी दर्शाना, जबकि ऐसा न हो, सबसे बड़ा अधर्म है ।

224. अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारों की जननी है ।

225. जितना ही हम अध्ययन करते जाते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञानता का आभास होता जाता है ।

226. आश्चर्य अज्ञानता की सुता, पूजा का आधार, ज्ञान का मूल तथा दर्शन का पहला कारण है ।

227. आत्मा अद्‌भुत शक्ति का भंडार है जिसकी विवेचना नहीं अपितु अनुभव किया जा सकता है । यही शक्ति 'निश्चय' को कार्य रूप में परिणत करती है तथा यह एक चेतन तत्त्व है ।

228. अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली हैं । जो संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं तथा श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं ।

229. विद्यालय ही देश के महापुरुषों का निर्माण करने वाला कारखाना है तथा अध्यापक उन्हें बनानेवाला कारीगर ।

230. जो व्यक्ति संसार की पिपासा व तृष्णा से रहित है, उस के लिए कुछ भी कठिन नहीं है ।

231. सज्जन जो कुछ आचरण करते हैं तथा उसी का अनुकरण अन्य लोग करते हैं । वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुकरण करते हैं ।

232. किसी से अनुग्रह की याचना करना अपनी आज़ादी बेचना है ।

233. व्यथा और वेदना की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों तथा विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते ।

234. बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है ।

235. दूसरों के अनुभव जान लेना भी व्यक्ति के लिए एक अनुभव है ।

236. जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते हैं, वर्ष नहीं ।

237. बाहर की अनुभूति जितनी प्रबल होती है, अन्तरात्मा में सत्ताबोध को भी उतना ही बल मिलता है ।

238. अपमान के घूँट पी-पीकर जिसने पेट भरा, उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्व ही निकलते रहेंगे ।

239. अभिमान अपने अपमान को नहीं भूलता ।

240. जिसकी हम इच्छा करते हैं, जिसकी सिद्धि हेतु हम सम्पूर्ण अन्तःकरण से अभिलाषा करते हैं, उसकी प्राप्ति हमें अवश्य होगी ।

241. समस्त भय और चिन्ता इच्छाओं का फल है ।

242. अभिलाषा तभी फल पैदा कर सकती है, जब वह दृढ़-निश्चय का चोला धारण कर लेती है ।

243. स्वस्थ एवं सुन्दर अभिलाषा सदा चाहती है कि हम मनुष्यत्व का विकास करें, अपने जीवन को सुन्दर एवं ऐश्वर्यशाली बनाएँ तथा अपना अधिकाधिक समय मानवीय गुणों को संगठित करने में ही व्यतीत करें ।

244. अविश्वास से बढ़कर एकाकीपन कोई अन्य नहीं ।

245. असंतोषी से आनन्द दूर रहता है ।

246. असफलता की भावना से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है, जितना कि बबूल के वृक्ष से गुलाब के फूल का खिलना ।

247. मानव के कर्म जितने तुच्छ होते हैं, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है ।

248. अहिंसा का मतलब इतना ही नहीं है कि हम किसी का बुरा चाहे या बुरा करें । बल्कि हर किसी का भला सोचना और भला करने के लिए आगे बढ़ना ही अहिंसा है ।

249. अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना ।

250. अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने वाला है, जरा भी गफलत हुई कि नीचे गिरे ।

251. सब प्राणियों के प्रति स्वयं को संयत रखना ही अहिंसा के पूर्ण दर्शन हैं ।

252. आँखें शरीर के दीपक हैं, जिनमें मनुष्य की आत्मा का प्रतिबिम्ब तथा जीवन के अनुभवों का भण्ड़ार भरा होता है ।

253. छलके हुए दूध पर आँसू बहाना व्यर्थ है ।

254. सबसे अच्छी वस्तु पाने की जिसमें आकांक्षा होती है; उसे बहुत सी अच्छी वस्तुएँ छोड़ देनी पड़ती हैं ।

255. जब तक हम स्वयं निरपराध न हों, तब तक दूसरों पर कोई आक्षेप सफलता के साथ नहीं कर सकते ।

256. आचरण एक शीशे के समान है, जिसमें प्रत्येक मानव अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है ।

257. आचरण भावना का प्रकट रूप है ।

258. जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया ।

259. समाज में सर्वसाधारण प्रचलित व्यवहार रीति को **आचार** कहते हैं । विचार जब प्रकृति के साथ घुल मिलकर एक हो जाते हैं, तब वे **आचार** बन जाते हैं ।

260. विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है ।

261. अत्याचारी के समक्ष नाक रगड़ने से आत्मा का गौरव नष्ट होता है ।

262. विचरो अपने पैरों के बल, भुजबल से भवसिंधु तरो ।
जियो 'स्वकर्म' के लिए जग्त में,
और धर्म के लिए मरो ।।

263. आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त देह का आश्रय लेती है । इसकी कोई जाति नहीं होती । यह ब्रह्म की ज्योति स्वरूप है ।

264. जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊब कर क्षण-प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं-उनमें आत्मबल नहीं ।

265. आत्मबल की सफलता का सबसे ब़डा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धों के बावजूद भी दुनिया अभी कायम है ।

266. आवेश और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है ।

267. आत्म-विश्वास, आत्मज्ञान और आत्म-संयम सिर्फ यही तीन जीवन को बल और सबलता प्रदान कर देते है ।

268. आत्मविश्वासी का भविष्य सर्वथा चिन्तारहित है । आत्म-विश्वास में वह अद्‌भुत शक्ति है जिससे मनुष्य सभी विपत्तियों का सामना अकेले ही कर सकता है ।

269. आत्म-सम्मान करना सफलता की सीढ़ी पर पग रखना है ।

270. सुख भोग की लालसा आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचा देती है ।

271. पाप, अनीति और अत्याचार के सम्मुख सिर झुकाना अपनी आत्मा का अपमान और हनन् करना है ।

272. आत्म हीनता ऐसी मृत्यु है जो पल-पल में आती है और तिल-तिल करके आन्तरिक शान्ति को जलाती रहती है ।

273. धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सकें, तो यह कोई महंगा सौदा नहीं है ।

274. व्यवसाय का प्रयोजन जब बहुत अधिक बढ़ जाता है, तब आत्मा की वाणी रुक जाती है ।

275. जिस प्रकार गगन में सूर्य है उसी प्रकार मस्तक में चक्षु है, तथा जिस प्रकार अंतरिक्ष में विद्युत है उसी प्रकार आत्मा में मन ।

276. सम्पूर्ण आश्चर्य अज्ञानता का फल है ।

277. जिस मानव की जितनी कम आवश्यकताएँ होती है उतना ही वह ईश्वर के समीप होता है ।

278. आवश्यकता तर्क के सम्मुख नहीं झुकती है । इसके लिए कोई कानून नहीं है ।

279. आवश्यकता अनाचारियों का तर्क है, यह पराधीनों का धर्म है । अतएव यह भीरु को भी वीर बना देती है ।

280. आवश्यकता हमें बाध्य करती है - आनन्दित नहीं ।

281. आवश्यकता प्रायः प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है ।

282. आलस्य दरिद्रता का मूल है ।

283. आलसी लोग विघ्न के भय से कोई भी काम आरम्भ नहीं करते, मध्य श्रेणी के लोग कार्य आरम्भ करके विघ्न पड़ने पर कार्य बीच में ही छोड़ देते है; लेकिन उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किए हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते ।

284. सुख या आनन्द कर्म के रूप में रहता है ।

285. आनन्द ही एक ऐसी चीज है जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते है ।

286. आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान है । जो कुछ नहीं करता केवल वही आलसी नहीं, आलसी वह भी जो अपने काम से भी अच्छा काम कर सकता है परन्तु करता नहीं है ।

287. ज़िन्दगी एक कसौटी एवं चुनौती है जिसे हमें हर पल स्वस्थ दृष्टिकोण से स्वीकार करना चाहिए । क्योंकि आर्तक्रन्दन से न कभी गगन झुका है, न कभी धरती पसीजी है ।

288. आदर्श की धुन में व्यावहारिकता का विचार करना कोरा आदर्शवाद है ।

289. अपने आदर्श तक पहुँचने के लिए आस्था एवं श्रद्धा हमारे दो हाथ हैं ।

290. हमारे आदर्श ऊँचे और उनका चरितार्थ होना इतना ही निश्चित है जितना कल का सूर्योदय । ऊँचे आदर्श की ओर रेंगकर नहीं जाया जा सकता । उसके लिए अपनी बलि देकर उड़ान लेनी पड़ती है ।

291. सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है ।

292. सेवा से सौभाग्य प्राप्त होता है तथा परमानंद का द्वार खुलता है ।

293. कड़वे और तीखे शब्द कमजोरी की निशानी है ।

294. जो मनुष्य यह समझता है कि हर बात उसकी समझ में तुरन्त आ जाती है वह कुछ भी नहीं सीख सकता ।

295. दूसरों का निरादर करना अपने भाग्य के द्वार बंद करने हैं ।

296. मोह और स्वार्थ अज्ञानता के पात्र हैं, अतः अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते हैं ।

297. कभी-कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमान वश अज्ञानी कहते हैं ।

298. अपनी सफलताओं के लिए प्रभु को धन्यवाद देना स्वस्थ मानसिकता है ।

299. हार का मतलब अंत नहीं है । हारा हुआ इन्सान यदि हार का मुकाबला करे तो उसकी जीत संभव है।

300. जहां ईश्वर की चर्चा होती है; वहीं आनन्द है ।

301. सद्गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बतलाते हैं ।

302. महान पुरुष की पहली पहचान उसकी नम्रता है ।

303. श्रेष्ठ घोड़े के लिए कोड़े की छाया ही काफी है; कोडा तो खच्चरों के लिए होता है ।

304. बुद्धिमान व्यक्ति बोलने से पहले सोचता है । मूर्ख बोल लेता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया ।

305. संसार में आज तक अच्छा युद्ध और बुरी शांति कभी नहीं हुई ।

306. किसी के दुर्वचन कहने पर क्रोध न करना क्षमा कहलाता है ।

307. विशुद्ध हृदय वाले सज्जनों की बुद्धि कभी मंद नहीं होती है ।

308. परमेश्वर की दृष्टि में सदाचारी मनुष्य अत्यंत सम्मानीय समझे जाते हैं ।

309. प्रभु के आदेश अनुसार जीवन जीना सच्ची साधना है; न कि मंत्र जपना या कर्म - काण्ड के बाहिरी आडम्बरों में समय गवाँना ।

310. अज्ञानी होना शर्म की बात नहीं, परन्तु किसी भी कार्य को उचित ढंग से सीखने के लिए तैयार न होना शर्म की बात है ।

311. यदि विश्वास वृक्ष का बीज है; दृढ़ इच्छा से इसका अंकुर फूटता है, निष्ठा और विवेक इसे सींचने का कार्य करती है तथा रोपने का कार्य करता है—**विचार** ।

312. वस्तु ज्ञान से आवश्यक है——व्यक्तिज्ञान, क्योंकि वस्तु जड़ है और व्यक्ति चेतन ।

313. उचित जिज्ञासा करते हुए उसका श्रद्धापूर्वक सही समाधान खोजने की चेष्टा ही **उपासना** है । यही पूर्णता का आध ार है ।

314. आदर्शवादी विचारों को अपने मन में, अपने अंतरंग में स्थापित करना, मनुष्य के जीवन की महानत्तम सेवा है; तथा मानव जीवन की सफलता का भी यही आधार है ।

315. अच्छी पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएँ हैं । उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है ।

316. सफल जीवन की दिशा हम किसी को उसका उपहास उड़ाने या उस पर व्यंग्य कसने से नहीं दिखा सकते, उचित है कि हम उसे सोचने, समझने और बदलने का अवसर प्रदान करें ।

317. परमेश्वर का प्यार सदाचारी और कर्त्तव्य परायणों के लिए सुरक्षित है ।

318. बड़प्पन अमीरी में नहीं अपितु ईमानदारी और सज्जनता में सन्निहित है ।

319. मानवी प्रगति के मार्ग में अत्यन्त छोटी किन्तु अत्यन्त भयानक बाधा 'अनियमितता' की आदत है ।

320. बुरी आदतों का सुधार ही सबसे बड़ा पराक्रम है, जो निजी पुरुषार्थ पर निर्भर है; तथा ऐसे लोग ही सच्चे अर्थों में शूरवीर हैं ।

321. मानव का चिन्तन एवं मनोबल कल्पवृक्ष के समान है । जिसका सदुपयोग हम सद्विचारों के लिए कर सकते हैं । वास्तव में विचार ही आंतरिक बल और पुरुषार्थ है । विचार को जिस किसी भी लक्ष्य पर नियोजित किया जाए, उसी के अनुरूप प्रगति एवं सफलता मिलती है ।

322. विचार सूक्ष्म स्तर का कर्म एवं कार्य का मूल रूप है ।

323. अच्छा श्रोता अपनी मदद करता है, जबकि अच्छा बोलने वाला दूसरों की ।

324. आत्मविश्वास आत्मा की पुकार है । यह अद्भुत, अदृश्य और अनुपम शक्ति है । इसके ही बल पर हम लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं तथा यही हमारा सच्चा मित्र एवं पथ प्रदर्शक है ।

325. ईश्वर को सर्वव्यापी न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारना युग-निर्माण का आधार है ।

326. शरीर को भगवान का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा हो सकती है ।

327. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग ही एक मार्ग है ।

328. इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का निरन्तर अभ्यास करने वाले महान लक्ष्य प्राप्त करते हैं ।

329. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति के पथ पर चलते हुए असफलता ही शिरोधार्य है ।

330. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान बनना हमारा कर्त्तव्य है ।

331. जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न रखना प्रभु की आज्ञा है ।

332. शिक्षा तो कहीं भी मिल सकती है पर विद्या के सूत्र कहीं - कहीं ही मिलते हैं, किन्तु जब भी ऐसा अवसर आता है, मानव का कायाकल्प हो जाता है ।

333. शिक्षा से ज्ञान, ज्ञान से चिन्तन, चिन्तन से कर्म और कर्म से सुख अतः कर्म ही सुख का मूल है ।

334. सीखो ऐसे जैसे सदा जीना है, जियें ऐसे जैसे कल ही जग से जाना है ।

335. रूप की पहुँच आँखों तक है, पर गुण आत्मा को जीतते हैं ।

336. क्रोध मूर्खता से शुरू होता और पश्चाताप पर खत्म ।

337. सम्पन्नता मित्रता बढ़ाती है, विपदा उनकी परख करती है ।

338. जिह्वा की चोट तलवार से तेज़ होती है; जिसका घाव भरता नहीं ।

339. धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएँ के बादलों की तरह उड़ जाते हैं ।

340. भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान में सुधार करने से भविष्य संवर सकता है ।

341. अवसर पुनः द्वार नहीं खटखटाता, उचित समय और अवसर पर किया गया कार्य या कहे हुए शब्द युग की पहचान बन सकते हैं ।

342. शरीर किसी का हो स्पष्टतः रक्त और मज्जा है और आत्मा तो सर्वत्र शुद्ध है । ऐसी स्थिति में अस्पृश्यता 'किस-की' और 'किस के लिए' । (विनोबा भावे)

343. निरहंकारिता से सेवा की कीमत बढ़ती है और अंहकार से घटती है ।

344. हिंसा का त्याग अहिंसा है यह वास्तविक शक्ति का प्रतीक है । जहाँ सत्य नहीं, वहाँ अहिंसा की रक्षा नहीं हो सकती । मन ज्यों-ज्यों हिंसा से दूर हटता है, त्यों-त्यों दुख शांत होता जाता है । वास्तव में किसी भी प्रकार से किसी को भी कष्ट न पहुंचाना ही **अहिंसा** है । (महात्मा बुद्ध)

345. हिंसा रूपी शस्त्र एक से एक बढ़कर है । परन्तु अहिंसा शस्त्र नहीं, यह श्रेष्ठ साधना है । अहिंसामूलक समता ही धर्मों का सार है । (महावीर स्वामी)

346. जीवन अनित्य एवं क्षणभंगुर है; फिर हिंसा में आसक्त क्यों ? (महावीर स्वामी)

347. अहिंसा सब आश्रमों का हृदय, सब धर्मों का उत्पत्ति-स्थान तथा सत्य का प्राण है । जो अनेकों को एक रखती, तथा भेदों में अभेद ढूंढती, वही अहिंसा है । जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर खरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैर भाव भूल जाते हैं । जिस प्रकार भौंरा पुष्प की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है; उसी प्रकार मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक हिंसा न करते हुए जीवन के मूलभूत अर्थों को ग्रहण करना चाहिए । (महात्मा बुद्ध)

348. सुसंस्कृत एवं परिश्रमी व्यक्ति अंतर्निहित पूर्णता हेतु विकास की ओर तीव्रगति से अग्रसर होता है; जिससे परिवेश और समाज इसके दिव्य सुवास से महक उठता है ।

349. मन के साधने से ही **'साधना'** संपदा है, मन न सधे तो विपदा । मन रहस्य है, सांसारिक सफलताओं का और आध्यात्मिक विभूतियों का । यह जहाँ बाहरी दुनिया का द्वार है वहीं अंतस की सीढ़ी भी है । इसको साधने से ही मानव लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है । मन को मित्रवत व्यवहार द्वारा ही सरलता से साधा जा सकता है ।

(गुरुदेव ओ. पी. शर्मा 'सारथी')

350. आत्म-विश्वास, आत्म-बल एवं आत्म-सयंम ही पराक्रम का सार है ।

351. आत्मबल से वीरता निश्चय ही सफल होती है जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊबकर क्षण प्रति क्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल है-उनमें आत्मबल नहीं ।

(सुभाष चन्द्र बोस)

352. आँसू अमूल्य वस्तु है । चाहे वे प्रेम के हो, कृतज्ञता के, आनन्द के या दुख के । दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते; परन्तु पश्चाताप के आँसुओं से तो जीवन का बगीचा पनपता है ।

353. जीवन में जहाँ आकाँक्षाएँ होती हैं, वहाँ अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है । अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव होता है तथा आत्मा को उपलब्ध कराना ही एकमात्र आत्मा की आकाँक्षा है ।

354. माँ और मातृभूमि के लिए कष्ट केवल सुयोग्य संतान ही झेलती है ।

355. परिश्रमी, ईमानदार, सत्यनिष्ठ एवं आदर्शप्रियजन से राष्ट्र के विकास का वातावरण निखरता है, जिसे निहारने का श्रेय हर व्यक्ति को मिलता है अतः राष्ट्र-हित के भवन की नींव-व्यक्ति हित में सन्निहित है ।

356. सूक्तियों में नीति के वचन थोड़े शब्दों में गागर में सागर की भाँति बड़ी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं । इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है । ये भावों को सजा-संवार कर सजीव बनाने एवं वक्तव्य कला को चमकाने में बड़ी सहायक होती है । (डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी)

357. मस्तिष्क मूल्यवान एवं महत्त्वपूर्ण संपदा प्रभु द्वारा दी गई भेंट हैं । उचित रूप से प्रयोग किए जाने पर यह महान सृजनात्मक शक्ति को साकार करती है ।

358. प्रगति में बाधक चिंता, निराशा, आशंका अविश्वास आदि भाव हर मानव पर वार करते रहते हैं, इन्हें पराजित करने के दो हथियार हैं, धैर्य रूपी कवच और साहस रूपी तलवार ।

359. कुविचारों और कुभावनाओं की जड़ें ईर्ष्या में सन्निहित हैं तथा सदाचार इसके लिए कुदाल का कार्य करता है ।

360. किसी की सफलता एवं उन्नति में प्रसन्न होने से अपनी गाँठ से तो कुछ भी नहीं जाता, उल्टे दूसरों का स्नेह अथवा श्रद्धा-पात्र बनकर लाभ ही होता है ।

361. मानव-जीवन; लौकिक एवं अलौकिक संपदाओं और विभूतियों का ढेर है इसको पहचानने हेतु अहं का चश्मा उतारना आवश्यक है ।

362. जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ होना तथा जीवन साधना की उपेक्षा करना, मन स्थिति एवं परिस्थितियों का परिणाम है; इसका सुधार केवल आत्मचिंतन कर सकता है ।

363. शिष्टाचार का गुण अभ्यास और आचरण द्वारा प्राप्त होता है । इसके लिए संवदेनशील हृदय होना आवश्यक है ।

364. अंत:करण न्याय का कक्ष है । इसकी परिपूर्णता से ही वाणी मुखरित होती है, तदनुरूप हाथ भी कार्य करते हैं ।

365. आत्मा जिस दिन क्रन्दन कर उठे, उस दिन सबसे पहले कहती है, मेरे जीवन को, मेरे मन को, समस्त असत्य से बचाकर सत्य में बाँध दो, अमृतत्व की बात तो पीछे की है ।

366. दुष्ट स्वभाव वाले भय से आदर्श का पालन करते हैं जबकि सद्प्रवृत्ति वाले प्रेम से ।

367. सद्ग्रन्थ एवं अच्छी पुस्तकें चिन्तामणि हैं । उनके अध्ययन से सब कुचिन्ताएँ मिट जाती हैं । संशय भाग कर सद्भाव जागृत करके परम शान्ति देते हैं ।

368. प्रकाश अदृश्य रहता है तथा अंधकार में ही इसका अनुभव होता है । अतएव अंधकार को पहचान कर ही हम प्रकाश से परिचित हो सकते हैं ।

ANMOL VACHAN

Compiled by :
DR. NIRMAL AIMA

> *"Struggle is the law of progress. There must be struggle between truth and untruth, between vice and virtue, between honesty and dishonesty, between expendiency and righteousness, between indolence and energy, between enterprise and a spirit of lethargy, and between saving selfishness and noble disinterestedness."*
>
> **–Lala Lajpat Rai**

1. 'An eye for an eye only ends up in making the whole world blind.' (Mahatma Gandhi)

2. 'I cannot conceive of any other better way of worshipping God than serving the poor.'

(Mahatma Gandhi)

3. A bee is honoured more than other insects not because she labours but she labours for others.

4. A candle consumes itself but lights other.

5. A cat in gloves catches no mice.

6. A certain peace is better and safer than a victory which is hope for.

7. A champion of righteousness makes no distinction between friend and foe.

8. A cheerful temper, joined with innocence will make beauty attractive, knowledge delightful and will be good natured.

9. A courage is dangerous in half.

10. A courageous foe is better than a cowardly friend.

11. A drop of ink may make to million's think.

12. A feather in hand is better than a bird in the air.

13. A generous action is its own reward.

14. A good book is the best friend, the same today and forever.

15. A good book is the purest essence to human soul.

16. A good friend is the nearest relative.

17. A good name is better than great riches.

18. A good scare is worth more to a man than good advice.

19. A great deal of talent is lost in this world for the want of a little courage.

20. A great obstacle to happiness is to expect too much happiness.

21. A half truth is a whole lie.

22. A learned man has always wealth in himself.

23. A life which does not go into action is a failure.

24. A little explained, A little endured;

25. A little forgiven, A quarrel is cured.

26. A man is least known to himself.

27. A man is never too old to learn.

28. A man of courage is also full of faith.

29. A man of courage is not depend upon weapons.

30. A man's good or bad fortune mostly depends upon his partner.

31. A man's happiness is in man's true work.

32. A picture is a poem without words.

33. A price of greatness is responsibility.

34. A righteous person is he who gives more than he receives.

35. A rolling stone gathers no mass.

36. A soft answer turn away wrath. but grievous words stir up anger.

37. A radical is a man with both feet firmly planted in the air.

38. A well spent day earns for us a sweet sleep at night.

39. A wolf may lose its teeth but not its nature.

40. Action speak louder than words.

41. Add love to a house and you have a home.

42. Admonish your friends privately but praise them openly.

43. Advice after mischief is like medicine after death.

44. Advice is judged by results, not by intentions.

45. Affection is as necessary to the mind as dress is to the body.

46. All are not friends that speak us fair.

47. All art is a revolt against man's fate.

48. All colour will agree in the dark.

49. All cruelty springs from weakness.

50. All experience is an arch to build upon.

51. All fail where faith fails.

52. All feet cannot wear one shoe.

53. All good comes to an end except the goodness of God.

54. All great alteration in human affairs are produced by compromise.

55. All human activities are prompted by desire. It is very essence of man.

56. All of us more or less are slaves of opinion. It is ultimately determined by the feelings and not by the intellect.

57. All religions are paths leading to one God.

58. All things that pass are wisdom's looking glass.

59. All thoughts, words and deeds require to be directed to the glory of the lord and the good of the world.

60. All truly great thoughts are conceived while walking.

61. All truth is not always to be told.

62. All wickedness comes of weakness.

63. Ambition and struggle are the wings of great action.

64. An artist or writer unlike other mortals has the power to transmute the bitter dross of life's miseries into the pure gold of literary art.

65. An honest man is always a child.

66. An honest man is the noblest work of God.

67. An honest man's word is as good as his bond.

68. An honest never became suddenly rich.

69. An idle brain is the devils workshop.

70. Anger is an acid that can do more harm to the vessel in which it's stored, than to anything on which it's poured. It is momentary madness.

71. Animals are such agreeable friends- they ask no questions, they pass no criticisms.

72. Appearances are often deceiving.

73. Art is not a handicraft. It is transmission of feelings of the artist, which he has experienced.

74. As is a tale, so is life, do not bother how long it is, but see how good is it !

75. As we advance in life, we learn the limits of our abilities.

76. Atheism is the voice of few intelligent people.

77. Atheist is man who has no invisible means of support.

78. Bad friends are thieves of time.

79. Be civil to all; sociable to many; friend to one; enemy to none.

80. Be like a rose which gives fragrance even to the hands which crushes it.

81. Be not angry that we cannot make others as we wish them to be, as we cannot make ourself as we wish to be.

82. Be not a beggar by banqueting upon borrowing.

83. Be ready to spend today for tomorrow's growth.

84. Be softer than butter when kindness is concerned.

85. Beauty is the smile of God, music his voice.

86. Beauty is truth, truth is beauty–that is all of us know on earth, and all we need to know.

87. Beauty without virtue is a flower without perfume.

88. Beg from beggars and we will never be rich.

89. Begin not with a programme, but with a deed.

90. Behavior is the mirror in which every body displays his image.

91. Best be ourself, impartial, plane and true.

92. Better an ugly face than an ugly mind.

93. Better be silent than speak ill.

94. Better to trust an open enemy than a reconciled friend.

95. Better to trust in God than in his Saints.

96. Between two evils, choose none between two goods choose both.

97. Beware of little expenses, a small leak will sink a greatship.

98. Books are the windows through which the soul looks out.

99. Borrowing is not much better than begging.

100. Business is business, if everybody minded their own business, the world would go round a great deal faster than it does.

101. Constant occupation prevents temptation.

102. Chance is a word void of sense, nothing can exist without a cause.

103. Changes never answer the end.

104. Character is higher than intellect. It makes destiny, it is much easier to kept than recover.

105. Character is simply habit long continued.

106. Character is the transcription of knowledge into action.

107. Character is what you are in the dark.

108. Cheerful company shortens the distance.

109. Children have more need of models than of critics.

110. Criticism is a study by which men grow important and formidable at very small expense.

111. Cleanliness is next to godliness.

112. Colours speak all languages.

113. Common sense is not the result of education so it is not so common.

114. Confess that we were wrong yesterday, it will show that we are wise today.

115. Confidence does more to make conversation than wit.

116. Conscious is the inner voice that warns us somebody may be looking.

117. Conscious is the perfect interpreter of life. It is God's presence in man.

118. Consciousness warns us as a friend before it punishes as a judge.

119. Corruption is the most infallible symptom of constitutional liberty.

120. Courage is necessary for maintaining virtue so it is always respected, even when it is associated with voice.

121. Cowards die many times before their death; The valiant never taste of death before death.

122. Creative art demands the service of mind and heart.

123. Crime is an antisocial form of the struggle for existence.

124. Cultivation to the mind is as necessary, as food to the body.

125. Curiosity is one of the most permanent and certain characteristics of a vigorous intellect.

126. Customs are the great guide of human life and the reconciles us.

127. Decency is the least of all laws, but yet it is the law which is most strictly observed.

128. Defeat should never, be a source of discouragement, but rather a fresh stimulus.

129. Delay of justice is injustice.

130. Democracy and socialism are means to an end, not the end itself.

131. Democracy demands discipline, tolerance and mutual regard.

132. Democracy, means not "I am as good as you are" but "you are as good as I am."

133. Desire hath no rest.

134. Devotion to duty is the highest form of worship of God.

135. Diet curse more than the doctor.

136. Discipline is learnt in the school of adversity.

137. Do all the good you can, by all the means, in all the way, in all the places at all the time, to all the people as long as ever you can.

138. Harmoney in thought, word and deed leads to success.

139. Doing good is the only happy action of a man's life.

140. Don't ask for a lighter burden, ask for stronger shoulders.

141. Doubt is the beginning, not the end of wisdom.

142. Dreams do not cost money but only at night.

143. Duty before desire.

144. Educated peoples are easily governed.

145. Education does not mean teaching people what they do not know. It means teaching them to behave as they do not behave.

146. Education is discipline for the adventures of life. It is the chief defence of nations.

147. Envey never dies.

148. Even from the body's purity the mind received a secret sympathetic aid.

149. Every beginning is hard. So well begun is half done.

150. Every child comes with this message that God has still faith upon man.

151. Every duty is holy and devotion to duty. It is the highest form to worship the God.

152. Every man is the architect of his own fortune.

153. Every temptation is a test of our strength.

154. Every thing that is wise has been thought already, we can only try to think it once more.

155. Everyday is a little life, and our whole life is a day repeated.

156. Examine what is said, not him who speaks.

157. Example is a lesson that all men can read.

158. Experience is the mother of knowledge.

159. Experience is the only prophecy of wise man.

160. Extreme remedies are very appropriate for extreme diseases.

161. Extremes are dangerous.

162. Facts are the air for scientists. Without them they can never fly.

163. Facts for to the mind is what food is to the body.

164. Failure takes one step nearer to victory only when we realize.

165. Faith is the force of life.

166. Fame has blind popularity no future.

167. Fate makes our relatives, choice makes our friends.

168. Faults are thick where love is thin.

169. Fine art is that in which the hand, the head, and the heart of man go together.

170. Fine feathers make fine birds.

171. First deserve then desire.

172. Flattery corrupts both the receiver and the giver.

173. Food is a weapon. Use it properly. What is food to one is better poision to other.

174. Forgive and you may be forgiven.

175. Fortune favours the brave.

176. Genius is one percent inspiration and ninety nine percent perspiration.

177. Give ready hand rather than ready tongue.

178. Give the world the best and the best will come to you.

179. Give work rather than aims to the poor.

180. God brings men into deep waters not to drown them but to clean them.

181. God is enough witness between you and me.

182. God regards pure hands not full.

183. God visits us often but most of the time we are not at home.

184. God's mill grinds slow, but sure.

185. Good advice may be given but not good manners, they can only be achieved.

186. Great actions speak great man.

187. Great crimes are always committed by great ignorant. There is nothing more frightening than active ignorance.

188. Great hopes make greatman.

189. Great men never feel great, Small men never feel small.

190. Great thoughts come from the heart not from head.

191. Greatness is the only investment that never fails.

192. Greatness lies not in being strong but in the right use of strength.

193. Happiness does not consist in things but in thoughts.It is different from pleasure.

194. Happiness has nothing to do with struggling, enduring and accomplishing. It lies in our consciousness.

195. Hate the sin and not the sinner.

196. He is most powerfull, who has power over himself.

197. He that governs others, first should be the master of himself.

198. He who will not be conceived cannot be helped.

199. He who can take advise is sometime superior to him who gives it.

200. He who is unable to rule over self can never really succeed in ruling over others.

201. He who loves not his country can love nothing.

202. He who wishes to secure the good of others, has already secured his own.

203. He will have the fruit who shall climb on the tree.

204. Health end cheerfullness mutually begets each other.

205. Hear no evil, Speak no evil. Do no evil, think no evil.

206. Honesty and integrity are best taught by examples.

207. Hope is a walking dream.

208. Hope is better companion than fear. It is the poor man's bread.

209. Hope is the pillar that holds up the world, It is dream of awaking man.

210. How often things occur by mere chance which we dared not even hope for.

211. How small are grains of sand ! Yet if enough are placed in a ship they sink it.

212. Hunger is the teacher of the arts and the inspire of invention.

213. If we take one stride towards God, God takes ten strides towards us.

214. If a man love to give advice, it is a sure sign that he himself warmth it.

215. If everybody minded their own business the world would go round a great deal faster than it does.

216. If the blind leads the another blind, both shall fall into the ditch.

217. If we always do our best we will be free from regrets.

218. If we see any good in others, make it own.

219. If you take care of others, God takes care of you.

220. If you want to succeed do not stare the stairs, climb it one by one.

221. If you wish for anything good, seek it from yourself, because a man who is his own friend can be the friend to all.

222. If you wish to know what a man is, place him in authority.

223. Ignore criticism when you are right and pay head to it when you are wrong.

224. Ill fortune is often an incentive to genius.

225. Imagination is the eye of the soul.

226. Imagination rules the world. What is now proved was once only imagined.

227. In great attempts it is glorious even to fail.

228. Individuals may perish, but truth is eternal.

229. It costs more to revenge injuries than to bear them.

230. It is better to light candle than to curse darkness.

231. It is better to lose in the right way than to win in a wrong way.

232. It is better to prevent crimes than to punish them.

233. It is difficult to make a name but it is more difficult to retain it.

234. It is easier to forgive an enemy than to forgive a friend.

235. It is easier to love humanity as a whole than to love one's neighbour.

236. It is easy to hate but it is healthy to love.

237. It is good enough to do good, one must loit the right way.

238. It is good to think well but it is divinity to act well.

239. It is hard for an empty bag to stand upright.

240. It is more necessary to cure the soul than the body.

241. It is not enough to do good, one must do it the right way.

242. It is not possible to serve two masters at the same time.

243. It is only by transforming ourselves, we can transform the world.

244. It is the sacred duty of the teachers to humanize the present humanity and civilize the present civilization.

245. It takes two to make a quarrel.

246. Keep your fear to yourself;

247. Kind words do not wear out the tongue.

248. Knowledge consists in understanding the evidence that establishes the fact, not in the belief that it is a fact.

249. Knowledge has no end.

250. Knowledge that is divorced from justice should be called cunning rather than wisdom.

251. Labour conquers everything to some extent.

252. Laws grind the poor, and rich men rule the law.

253. Liberty is the power of doing what is allowed by law.

254. Life in a loom, weaving illusions.

255. Life is a great bundles of little things.

256. Life is a process of struggle. Do not hope of getting anything without struggle.

257. Life is a school of probability.

258. Life is one eternal struggle between good and evil.

259. Life is what happens while we are making other plans.

260. Live always as if you were under the very eye of the Supreme.

261. Lives of great men all remind us about the great deeds.

262. Live with men as if God saw you; converse with God as if men heard you.

263. Loyalty worths more than money.

264. Man can overcome mountains by faith.

265. Man has no nature he has only a history. He is the creature of circumstances.

266. Man is a bridge between the two worlds the visible and the invisible.

267. Man is by nature a political as well as social animal.

268. Man was born free, and every where he is in chains.

269. Men who know the same things can not be at long the best company for each other.

270. Manners make the man.

271. Man's character is his fate.

272. Marriage is not a word but a sentence.

273. May we follow the path of goodness as the sun and the moon follow their path !

274. Men are born with two eyes, but with one tongue, that they should see twice as much as they say.

275. Men love to wonder, and that is the seed of science.

276. Men make Gods in their own likeness.

277. Men shut their door against the setting sun.

278. Mind may die. Maya may die, Body dies and dies, but hope and thirst never die.

279. Misfortune comes on wings and depart on foot.

280. Money and mind are good servants but dangerous master.

281. Morality is a private and costly luxury.

282. More important is to become a man of value rather than a man of success.

283. Most powerful is he who has himself in his own power.

284. Natural ability without education has more often raised a man to glory and virtue than education without natural ability.

285. Nature is the living garment of God and we must love it.

286. Nature of a great mind is to be calm.

287. Necessity is the mother of invention.

288. Neither blame yourself nor praise yourself.

289. Never believe what you hear, half believe what you see, full believe what you understand.

290. Nothing great can be achieved without facing the danger.

291. No bad man is free from worries.

292. No man ever became great or good except through many and great mistakes.

293. No man is good enough to govern another man without that other's consent.

294. No one can be perfectly happy till all are happy.

295. No one knows what he can do till he tries.

296. Nothing can bring peace except yourself.

297. Nothing great can be achieved without enthusiasm.

298. Nothing is easier than to cheat an honest man.

299. Nothing is more honourable than a greatful heart.

300. Nothing is ours except time.

301. Nothing is so rash as fear.

302. Nothing of tomorrow is known , so be good and happy today.

303. No culture can live if it attempts to be exclusive.

304. Obedience is the mother of success.

305. Of all bad things by which mankind are cursed, their own bad tempers surely are the worst.

306. Old age and happiness seldom go together. It is state of mind, not state of health.

307. One already wet does not feel rain.

308. One cannot travel far if he is anchored.

309. One flower does not make a spring.

310. One gives nothing so liberally as advice.

311. One picture is worth more than ten thousand words.

312. One who never fails will never grow rich.

313. One who would gather roses must not fear thorns.

314. Only the brave know how to forgive.

315. Own desire leads every man, He begins to die who quits his desires.

316. Painting is silent poetry, and poetry is speaking picture.

317. Patience is a flower that grows not in everyone's garden. It is a remedy for every suffering. It is a strong horse but it tires at last. It is bitter, but its fruit is sweet. If patience abused becomes madness.

318. Peace beings just where ambition ends.

319. Peace is to be produced by victory not by negotiation.

320. Pen is stronger than sword.

321. Penny saved becomes a pound tomorrow.

322. People can be strong where the laws are strong.

323. Politeness is the flower of humanity.

324. Poverty is a great enemy to human happiness.

325. Poverty is the mother of crime.

326. Poverty wants much; but avarice, everything.

327. Poverty wants something, while luxury wants all things.

328. Pure food (well earned food) brings a pure mind and in a pure mind there is constant memory of God.

329. Pure thoughts good action and remembering God's name is all that is required.

330. Put not your trust in money, but put your money in trust.

331. Realization of God is absolute consciousness.

332. Recall your courage and lay aside fear.

333. Religion is not a dogma, nor an emotion, but a service.

334. Religion is the best armour in the world but the worst cloak.

335. Religion is the manifestation of divinity already in man.

336. Revenge is the poor delight of little minds.

337. Science and art belong to the whole world, and before them vanish the barriers of nationality.

338. Science is nothing but trained and organized common sense.

339. Secret is nothing but the weakness of a person.

340. Self trust is the essence of heroism.

341. Self trust is the first secret of success.

342. Self-conquest is the greatest victory.

343. Self-interest is the enemy of all true affection.

344. Selfishness is the greatest curse of the human race.

345. Set the cart before the horse.

346. Share your courage with others.

347. Shed hatred and not blood.

348. Silence and modestly are very valuable qualities in the art of conversation.

349. Silence is one great art of conversation.

350. Silence is sometimes more eloquent than speech.

351. Sin has many tools and lie is the handle which fits them all.

352. Sincerity is never ludicrous it is always respectable.

353. Smooth seas do not make skilfull sailors.

354. Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digested.

355. Some men are born great, some achieve greatness, and some have greatness thrust upon them.

356. Speak kind words and you will hear kind echoes.

357. Strength does not come from physical capacity, it comes from indomitable will.

358. Success demands strange sacrifices from those who worship her.

359. Success lies in the motto of exerting ourself a little more and doing a little better.

360. Superstition is the poison of the mind.

361. Sweet innovation of a child is most pretty and pathetical.

362. Sweet is the remembrance of troubles, when we are in safety.

363. Taste the joy that springs from labour. Than we can make our lives sublime.

364. The advantage of the emotion is that they lead us astray.

365. The angry man always thinks he can do more than he can.

366. The art of conversation consists as much in listening politely as in talking agreeably.

367. The ballot is stronger than the bullet.

368. The beauty seem is party in him who sees it.

369. The best secret of happiness is renunciation.

370. The best sort of revenge is not to be like him who did the injury.

371. The best teachers of humanity are the lives of great men.

372. The best tranquillizer is a clear conscious.

373. The bravest persons are the most forgiving and the most anxious to avoid quarrels.

374. The business of life is to go forward.

375. The confession of evil works is the first beginning of good works.

376. The day that make us happy make us wise.

377. The deepest sin against the human mind is to believe things without evidence.

378. The desire for pleasure and power is a great barrier to spiritual peace.

379. The difference between genious and stupidity is that, genious has its limits, While other has no limits.

380. The education forms the common mind, Just as the twig is bent the tree's inclined.

381. The education of the heart cannot be imparted through books, It can only be done through the living touch of a teacher.

382. The empty vessel makes the greatest sound.

383. The essence of belief is the establishment of a habit.

384. The eyes believe themselves; the ears believe other people.

385. The fewer your wants, the nearer you resemble to God.

386. The fire proves gold, adversity and brave men.

387. The first wealth is health.

388. The footsteps of fortune are slippery.

389. The force that rules the world is conduct, whether it be moral or immoral.

390. The great end of life is not knowledge but action.

391. The greatest homage we can pay to truth is to use it.

392. The greatest remedy for anger is delay.

393. The greatest sacrifice is the sacrifice of time.

394. The greatest wealth is a poverty of desires.

395. The hands that help are holier than the lips that pray.

396. The happiest person is the person who thinks the most interesting thoughts.

397. The heart of the fool is in his mouth, but the mouth of the wise is in his heart.

398. The important thing about any word is how you understand it.

399. The intelligent man finds almost every thing ridiculous, the sensible man hardly any thing.

400. The light of the body is the eye.

401. The love of God knows no fear of sword or death.

402. The man who lives to find faults has a miserable mission.

403. The man who never alters his opinion is like standing water and breeds reptiles of mind.

404. The most difficult thing in life is to know yourself.

405. The most powerful force on earth is unity.

406. The most useful virtue is patience.

407. The noblest motive is to work for public-good.

408. The parents life is the child's copy-book.

409. The patriot's blood is the seed of freedom's tree.

410. The pen is the tongue of the mind.

411. The profession of soldiers and sailors has the dignity of danger.

412. The rains that make the lower plains fertile are formed in the upper layers of the atmosphere.

413. The real aim of education must be to get each one out of his isolated class into the one humanity.

414. The remedy for worry is to get occupied doing something constructive.

415. The reward of one duty done, is the power to fulfill another.

416. The roots of education are bitter, but the fruit is sweet.

417. The secret of happiness is freedom, and the secret of Freedom is Courage.

418. The seeds of our punishment are sown at the same time we commit sin.

419. The short sayings of wise and good men are of great value, like that dust of gold, or the sparks of diamonds.

420. The sincere alone can recognize sincerity.

421. The strongest man in the world is he who stands alone.

422. The sun needs no flattery.

423. The sun shines on the wicked also.

424. The superior man is slow in his words and earnest in his conduct.

425. The tongue is the ambassador of the heart, so use it carefully.

426. The virtue lies in the struggle not in the prize.

427. The weak can never forgive, forgiveness is the atribute of the strong.

428. The wiseman learn good deeds from enemies. He is his own best assistant.

429. The word 'Religion' like the 'God' is ambiguous, but it cannot have different meaning for different people. It is an ornament for the soul.

430. The world is a comedy to those who think, a tragedy to those who feel.

431. The world is like a mirror, if we smile, it smiles, if we frown, it frowns back.

432. Thinking well is wise planning while doing well is wisest and best of all.

433. There are no gains without pains.

434. There are no rainbow without rain. There are no victories without pain.

435. There are two ways of exerting one's strength : one is pushing down, the other is pulling up.

436. There is no pillow softer than clear conscious.

437. There is no thief like a bad book.

438. There is not a single moment in life when man cannot serve.

439. There is nothing good or bad but thinking makes it so.

440. There is nothing in the world so much admired, as a man who knows how to bear unhappiness with courage.

441. There is nothing on earth divine except humanity.

442. There is nothing permanent except change.

443. There is properly no history; only biography.

444. They serve God most, who serve his creatures.

445. Things are not always what they seem.

446. Think all you speak, but speak not all you think.

447. Thinking is the talking of the soul with itself.

448. Those who do not complain are never pitied.

449. Thoughts lead to purposes, purposes go forth in action; action forms habit; habits decide character and character fixes our destiny.

450. Time is the soul of the world.

451. To achieving the goal is not so important as the means how we have achieved it.

452. To be proud of learning is the greatest ignorance.

453. To bear is to conquer our fate.

454. To beg from beggars, one can never be rich.

455. To do nothing at all is the most difficult thing in the world and the most intellectual.

456. To have balance in all situations is the key to happiness.

457. To know much is often the cause of doubting more. It can be ended by action alone.

458. To labour is to pray to God.

459. To make your children capable of honesty is the beginning of education.

460. To master one's self is the greatest mastery.

461. To read without reflecting is like eating without digesting.

462. Tomorrow can only be what you have made today.

463. Training means learning the rules. Experience means learning the exceptions.

464. Troubles are often the tools by which God fashions us for better things.

465. True greatness is being great in little things.

466. Trust him not who has once broken your faith.

467. Truth may be stretched, but cannot be broken. It always gets above falsehood, as oil does above water.

468. Two men looked out of the prison bars, one saw mud and the other stars.

469. Understanding is the reward of faith.

470. United we stand, divided we fall.

471. Unselfish and noble action are the most radiant pages in the biography of soul.

472. Virtue cannot exist with out reason. It never grows old.

473. Virtue is its own revenge. It is of the heart and not of the mind. When the mind cultivates virtue, it is cunning calculation.

474. We are all born equal and are distinguished alone by virtue.

475. We can make only others better by being good ourself.

476. We cannot climb the ladder of success with hands in our pockets.

477. We cannot imagine life without a problem, only the dead have no problem.

478. We have no right to consume happiness without producing if than to consume wealth without producing it.

479. We judge ourselves by what we feel capable of doing , while others judge us by what we have already done.

480. We live in deeds, not in years.

481. We make living by what we get, but we make life by what we give.

482. We never know the worth of water till the well is dry.

483. We see things not as they are, but as we are.

484. Well begun is half done.

485. What cannot be cured must be endured.

486. What governs men is the fear of truth.

487. What greater crime than loss of time. Lost time is never found again.

488. What is a friend ? A single soul which dwells in two bodies.

489. What is the best Government ? That which teaches us to govern ourselves.

490. What you are is God's gift to you; what you become is your gift to God.

491. When a secret is revealed, it is the fault of the man who confided.

492. When egoism goes, all miseries vanish along with it.

493. When men are pure, laws are useless when men are corrupt laws are broken.

494. When poverty comes in at the door, friends flies out from the window.

495. Where no hope is left, there is no fear.

496. Where there's a will, there's trouble.

497. Who holds the souls of children, holds the nation.

498. Wise men learn by other men's mistakes, fools by their own.

499. Wonders are many, but none is more wonderful than man.

500. Work gives worthiness.

501. World can be good and pure only if our lives are good and pure.

502. Wounds of tongue are deeper than wounds caused by swords.

503. You can not teach a crab to walk straight.

504. You can take horse to water, but you can't make him drink it.

505. You never know what you can do till you try.

506. Your only duty is to realize God. This includes all other duties.

507. The only thing we have to fear is fear itself.

508. What ever in began in anger ends in shame.

509. The greatest discovery is that human being can alter their lives by altering their attitudes of mind.

510. Be kind, for everyone is fighting a hard battle.

511. Character can be developed when the soul be strengthened, ambition inspired and success achieved.

512. The significant problems we face cannot be solved at the same level of thinking we were at when we created them.

513. Ignorance is the mother of devotion. Once it dispelled is impossible to re-establish.

514. To live in suspense is a miserable thing. It is the life of a spider.

515. Jugdement is forced on us by experience. Judging and feeling are not the same thing.

516. Education is a weapon whose effect depends on who holds it in his hands and at whom it is aimed.

517. Even a single lamp dispels the deepest darkness.

518. True friends are like diamonds, very precious and rare. False friends are like autumn leaves found every where.

519. Friendship is like money, more easily made than kept.

520. The child is a book, teacher has not to go page to page but word to word.

521. Music is the medicine of the mind.

522. We cannot change the direction of the wind, but we can adjust our sails to reach our destination.

523. A true friend is one who walks in, when the rest of world walk out.

524. One lamp lights another and its light does not grow less.

525. Every dogma has its day, but ideas are eternal.

526. Chance happens to all. To turn chance into account is the art, which knows only few.

527. Mental purity brings environmental purity.

528. To have the ballance of mind in all sitution is the key to happiness.

529. Love can turn a cottage into a golden palace.

530. A house is a home within a fence around it, but not within it.

531. The source of man's unhappiness is his ignorance of nature.

532. True fridndship is not made in a day. It is the fruit of many sunrises.

533. Everyday should be passed as on it were to be our last.

534. The only worthwhile achievements of man are those which are socially useful.

535. Duty begins where natural necessities end.

536. 'I admit that the strong will rob the weak and that it is a sin to be weak.'

(Mahatama Gandhi)

537. Men love to wonder and that is the seed of science.

538. What we see is news, what we know is background, what we feel is opinion.

539. An error does not become truth by reason of multiplied propagation.

540. The sum of behaviour is to retain a man's own dignity, without intruding upon the liberty of others.

541. "Though you do good without any thought of fame, yet fame will result. If you have fame, though you have no thought of profiting thereby, yet wealth will accrue. If you are rich, though you don't mean to stir up enmity, yet enmity will be unavoidable. Therefore, a superior man is cautions about doing good." (Yang Chu)

542. Riches are not from abundance of worldly goods, but from a contented mind.

543. Education must teach the student his duty in life. Eating, dressing and earning are not a duty but natural processes to keep alive. Duty begins where natural necessities end. Today there is little difference between the educated and the uneducated because they are devoted to the same end : Money making.

544. Everything is destroyed by its own particular vice : the destructive power resides within. Rust destroys iron, moths destroy clothes, the worm eats away the wood; but greatest of all evils is envy, impious habitant of corrupt souls.

545. Good deed is like a tiny mustard seed, planted in a garden; soon it grows into a tall bush, and the birds live among its branches.

546. Physical excellence does not itself produce a good mind and character; It is excellence of mind and character that will make the best physique.

547. Beyond the senses are the objects. Beyond the objects is the mind. Beyond the mind is the understanding. Beyond the understanding is the great self. Beyond the great self is the Unmanifest that is spirit. Beyond the spirit there is nothing.

548. Yoga is the state wherein there is no Sankalpa-Vikalpa (thought or doubt). Yoga is the control of mind and its modifications. Yoga is the equal state between Jivatma (individual soul) & Paramatma (Supreme Soul).

549. The world is mere reflection in the mind, like the image in the mirror. The mind is the mirror. When the mirror is removed, the image becomes mereged in the object. So also when the mind is merged in the Self, the world ceases to exist as a separate entity.

550. 'He who is kind to the poor lends to the Lord, and He will repay him for the deed.'

(Holy Bible)

551. 'Many are the plans in the mind of a man, but it is the purpose of the Lord that will be established.' (Holy Bible)

552. 'What is desired in a man is loyalty, so a poor man is better than a liar.' (Holy Bible)

553. 'The fear of the Lord leads to life; and he who has it rests satisfied; he will not be visited by harm.' (Holy Bible)

554. 'Open your mouth for the dumb, for the rights of all who are left desolate, judge reighteously, manitain the rights of the poor and needy.' (Holy Bible)

555. 'The heart knows its own bitterness, and no stranger shares its joy.' (Holy Bible)

556. 'It is worthy if the blessing will stand, If not the blessing will return to you.' (Jesus Christ)

557. 'Do not worry about whether you have enough for to eat or clothes to wear. For life consists of far more than food and clothes.' (Jesus Christ)

558. 'To live happily and to work for the happiness of others is the only religion worthy of God.' (Napoleon)

559. 'Civilization, in the real sense of the term, consists not in the multiplication but in the deliberate and voluntary reduction of wants.' (Mahatma Gandhi)

560. 'Which you see, is not God; and for God you have no words. It cannot be told by the words of the mouth; it cannot be written on paper. It is like the feelings of a dumb man who tastes a sweet thing–how shall it be explained ?' (Kabir)

561. Power is not sufficient evidence of truth.

562. 'There is only one magic to remove poverty–hard work, iron will, clear vision, and strict discipline.' (Indira Gandhi)

563. 'Character is not so much taught as caught.' (Jesus Christ)

564. 'You cannot lead on the path unless you become the path itself.' (Jesus Christ)

565. 'Those who labour in the field, the factory and the office, the charming women, the bright eyed children, the dynamic youth, the alert intelligentsia and the middle classes who have formed the backbone of all movements—these are the citizen of our India.' (Indira Gandhi)

566. 'In my humble opinion, non-co-operation with evil is as much a duty as co-operation with good.' (Mahatma Gandhi)

567. 'If we are to make progress, we must not repeat history but make new history.'

(Mahatma Gandhi)

568. The life is a jungle of ideas in which any planned march is not possible. All that we need is a torch and that torch has to be ourself.

569. 'Every dose of medicine is a blind experiment on the vitality of the patient.'

(Dr. Bostock)

570. 'When you are arrested and stand trial, don't worry about what to say in your defence. Just say what God tells you to. The you will not be speaking, but the Holy Spirit will.' (Jesus Christ)

571. 'When you give a gift to a beggar, don't shout about it as the hypocrites do... But when you do a kindness to someone, do it secretly, don't let your left hand know what your right hand is doing.' (Jesus Christ)

572. 'Let we carefully avoid all undertakings the success of which depends on others; but let we eagerly pursue the accomplishment of which depends on himself. Everything that depends on others gives pain. Everything that depends on onself gives pleasure; know that this is the short definition of pleasure and pain.' (Manu)

573. 'Atman cannot be attained by discussions, vast erudition, or intelligence or much learning. He who has a calm mind, who has controlled the senses, who does regular deep meditation, attains self-realization easily.' (Vedanta-Sara Upanishad)

574. 'All human actions have one or more of these seven causes : chance, nature, compulsions, habit, reason, passion, and desire.' (Aristotle)

575. 'Man's mind is blind due to deisres.'

576. Sows the seed of its own suffering;
In pursuit of indulgence of the self,
If foregets God and undergoes endless suffering.' (Guru Nanak)

577. 'Put your talents in the service of the country instead of converting them into pounds, shillings and pence.' (Mahatma Gandhi)

578. 'The urge to revolt is a force which can be used positively or negatively. In its positive form it becomes the will to achievement.'

(Indira Gandhi)

579. 'Where ever your treasure is, there your heart and thought will also be.' (Jesus Christ)

580. 'The way to identify a tree or a person is by the kind of fruit produced. Not at all who talk like godly people are.' (Jesus Christ)

581. The true perfection of man lies not in what a man has, but in what a man is.

582. Ultimate Reality is not existent, nor non-existent; it is not thus, it is not otherwise; it is not born, it does nor decay, or die or grow; nor does it purify. The ever-pure is the mark of the Ultimate Reality.'

(Brahma Sutra)

583. To understand is hard. Once you understand, action is easy.

584. 'Sivam astu sarvajagatah para-hita-niratah bhavantu bhutagana
Do sah prayantu nasam sarvatra sukhi bhavatnu lokah.' (sanskrit) (Brahma Sutra)
"Let there be peace in the whole world. Let everyone exert for the well-being of others. Let evil disappear. Let every body be happy everywhere." (Eglish Translation)

585. 'All living beings have an equal right to live. All of them like living and dislike dying. Therefore, do not kill, injure, enslave, torture or exploit any living being. The killing of any living creature amounts to killing oneself. Violence begets enmity. Hence be a friend to all living beings.'
(Bhagwan Mahavira)

586. 'Vast fields of human souls are ripening all around us, and are ready now for reaping. The reapers will be paid good wages and will be gathering eternal souls into the greeneries of heaven ! What joys await the sower and the reaper, both together ! For it is time that one sows and some one else reaps.' (Jesus Christ)

587. 'Papan baj na hoye akathi te marian sath na Jahae.' [Punjabi] (Guru Granth Sahib)
Wealth cannot be gathered without sins and it accompanies you not after death.

(English Translation)

588. 'Kuan vada ? Maya vadiahi ?
So he vada jin har liv lahi.'[Punjabi]

(Guru Granth Sahib)

Who is big ? Is wealth big ? Only that person is big who has concentrated his mind on God. (English Translation)

589. 'O friend ! listen ! Just as bubbles are born on water and then disappear in water, God has made the world in the similar form a bubble.' (Guru Nanak)

590. Class is not defined by birth. An old mandarin or an exlandlord may be an honorary proletariat; some of the most vicious of the organization men were once poor peasants, corrupted by power. Class is defined by a state of mind, and the state of mind is revealed in conduct.

591. The present contains nothing more than the past, and what is found in the effect was already in the cause.

592. 'Science of non-violence can alone lead one to pure democracy.' (Mahatma Gandhi)

593. 'Right views :- right intentions; right speech; right action; right livelihood; right mindfulness; right concentration; right efforts are eight paths which leads towards Realization' (Buddha)

594. 'More is always expected from people who give much.' (Mahatma Gandhi)

595. 'Satisfaction is in the effort, not in the attainment. Full effort is full victory.'

(Mahatma Gandhi)

596. 'God will accept any gift, A fruit, a flower, a leaf, even water, If it is offered purely, and devoutly, with love.' (Bhagavad Gita)

597. 'Life is greater than all art. I would go even further and declare that the man whose life comes nearest to perfection is the greatest artist.' (Mahatma Gandhi)

598. 'Even to foes who visit us as guest thus hospitality should be displayed; the tree screens with its leaves the man who fells it.' (Mahabharata)

599. 'O monks, believe nothing, merely because you have been told it...or because it is traditional, or because you yourselves have imagined it. Do not believe what your teacher tells you merely out of respect for the teacher. But whatsoever, after due examination and analysis, you find to be conductive to the good, the benefit, the welfare of all beings–that doctrine believe and cling to, and take it as your guide.' (Gautam Buddha)

600. "It isn't your sacrifice and nor your's gift I care about–it's that only you have some pity." (Jesus Christ)

601. 'You should constantly perform your duty without attachment, for, performing duty without attachment man verily attains the Highest Goal.' (Gita)

602. 'India must conquer her so-called conquerors, by love. For us patriotism is the same as the love of humanity.'

(Mahatma Gandhi)

603. Social reform is not to be secured by noise and shouting, by complains by the formation of parties, or the making of revolution, but by the awakening of thought and the progress of ideas. Reform must come out from within. We cannot legislate for virtue. The pillars of truth and the pillars of freedom are the pillars of society. Only great society on the earth is the noble living and the noble deed.
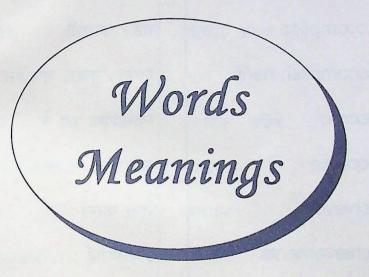
Words
Meanings

Absent	अनुपस्थित
Abundance	बाहुल्य
Accompany	साथ (संग)
Accomplice	सह - अपराधी
Accomplishment	दुष्कर/सुकर, संपादित करना
Accrue	स्वाभाविक रूप से
Accurse	अभिशप्त, धिक्कार
Achieve	प्राप्त करना
Achievements	उपलब्धियाँ
Admire	प्रशंसा करना
Admonish	चेतावनी देना
Advance	आगे
Advantage	लाभप्रद
Adversity	समस्याएँ, बाधाएँ

Advice	निर्देश
Advise	नसीहत देना
Affection	स्नेह
Agree	स्वीकार करना
Aim	लक्ष्य
Alert	जागरूक, सचेत
Allteration	बदलाव
Alter	बलिदान
Ambassdor	दूत
Ambiguous	एकाधिक
Ambition	इच्छुक
Analysis	विश्लेषण
Anchored	रोकना, खूँटे से बाँधना
Anger	क्रोध

Angle	कोण
Answer	उत्तर
Appearances	दिखाई देने वाला
Appropriate	उचित
Architect	रचनाकार
Armour	कवच
Astray	भटकता हुआ, भटकना
Atheism	नास्तिकता
Atheist	नास्तिक
Attachment	राग
Attempts	प्रयास
Attractive	आकर्षित

Authority	अधिकार, शक्ति
Autumn	पतझड़
Avarice	निर्देश
Awaking	जागना
Backbone	सहारा, रीढ़ की हड्डी
Banqueting	महाभोज
Barrier	बाधा
Beauty	सुन्दरता.
Bee	शहद की मक्खी
Begets	प्राप्त होना, लाना
Beggars	भिखारी
Behaviour	व्यवहार
Better	अच्छा
Beware	सावधान
Borrowing	उधार लेना

Branch	शाखा
Brave	बहादुर
Bridge	पुल
Bullet	गोली
Bundles	एकत्र
Bush	झाड़ी
Business	कारोबार
Calm	शांत
Capable	योग्य
Cause	कारण
Chains	जंजीर
Character	चरित्र
Characteristic	विशिष्ट अंदाज में
Cheerful	खुश, प्रसन्न
Chewed	चबाना

Civilization	सभ्यता
Cling	कसकर लिपट जाना
Cloak	चोगा, मन के भावों को छुपाना
Commit	वायदा करना
Companion	साथी
Compromise	समझौता
Conceived	विचार करना, विश्वसनीय
Conduct	व्यवहार
Confess	दोष मानना
Confession	दोष स्वीकार करना
Confided	विश्वास
Conquer	जीतना
Conquest	विजय
Conscious	चेतन
Consciousness	चेतना

Consent	स्वीकार करना
Constructive	रचनात्मक
Content	सहमत, संतुष्ट
Contented	संतोषजनक
Conversation	सहयोग
Convert	परिवर्तन करना
Co-operation	सहयोग
Corrupt	भ्रष्ट
Cottage	झोंपड़ी
Counsel	परामर्श, मंत्रणा
Courage	साहस
Coward	कायर
Crime	जुर्म
Criticism	आलोचना
Critics	आलोचक

Cruelity	बरबरता, क्रूरता
Cultivation	कृषि, परिष्कर
Cure	ठीक होना
Curiosity	जिज्ञासा
Custom	रीतिरिवाज
Dangerous	खतरनाक, भयानक
Dared	साहस
Darkness	अंधेरा, अज्ञान, तम
Deceiving	धोखा देना
Decency	शालीनता
Deed	कार्य
Deepest	गहरा
Defeat	हार
Defence	बचाव
Delay	देर

Deliberate	भली भाँति विचार करना
Delight	प्रसन्नचित
Deserve	अधिकारी होना
Desire	इच्छा
Desolate	निर्जन, अकेला
Destination	लक्ष्य, मंजिल
Destiny	भाग्य
Destroy	तबाह होना
Destroyed	विनाश
Destructive	विनाशक
Devils	राक्षसवत कार्य करना
Devotion	लग्न, लगाव
Diamond	हीरा
Diet	खुराक
Difference	भिन्नता

Digesting	पचाना
Disappear	लुप्त होना
Discouragement	हतोत्साहित करना
Dispel	दूर करना
Distinction	प्रमुखता, महत्त्व
Ditch	खाई
Divine	दिव्य
Divinity	धार्मिक, दिव्यता
Doctrine	मत, सिद्धांत
Dogma	सिद्धांत
Drape	वस्त्रों से ढकना, परदा
Dross	कचरा
Educated	साक्षर
Egoism	अहंकार
Eloqiuent	सुवक्ता, अच्छा बोलने वाला

Emotion	भाव
Empty	खाली
Endured	सहन करने योग्य
Enmity	शत्रुता
Enough	काफी
Enterprise	साहस
Enthusiasm	उत्साह, उमंग
Entity	अस्तित्व
Envy	ईर्ष्या
Error	गलती
Erudition	पांडित्य, विद्वता
Essence	महक
Establish	स्थापित
Establishment	स्थापित करना
Eternal	शाश्वत

Everything	प्रत्येक
Evidence	प्रमाण
Evil	बुराई
Excellence	उत्कृष्ट
Except	स्वीकार करना
Exceptions	विरोध करना, आपत्ति
Exclusive	असामान्य, विशिष्ट
Exert	परिश्रम
Existent	अस्तित्ववान
Expend	व्यय करना
Expenses	लागत
Experience	अनुभव
Explained	स्पष्ट करना
Extent	वास्तविक, विद्यमान
Extreme	सर्वाधिक

Failure	असफल
Fair	स्वच्छ
Faith	विश्वास
Fame	प्रसिद्धि
Fate	भाग्य
Favour	पक्षपात
Fear	डर, भय
Feather	पंख की तीलियां
Fertile	उपजाऊ
Fits	युक्त
Flannel	गर्म कपड़ा
Flattery	खुशामद
Foe	शत्रु
Forgiven	क्षमा करना
Formidable	प्रबल, भयंकर

Fortune	भाग्य
Forward	आगे
Fragrance	महक
Free	स्वतन्त्र
Freedom	आज़ादी, स्वतंत्रता
Frown	तेवर
Fulfill	पूरा करना
Garden	बगीचा
Gather	एकत्र करना
Generous	उदार, त्यागपूर्ण
Genious	विवेकी
Germinate	अंकुरण
Glorious	ओजपूर्ण
Gloves	दस्ताने
Govern	शासन

Greatness	महानता
Grind	चक्की
Grinds	पीसना
Habitant	नास्तिक
Handicraft	हस्तकला
Happiness	प्रसन्नता
Head	सिर
Heroism	साहस
Holds	पकड़ना
Holy	पवित्र
Homage	श्रद्धाँजलि
Honest	ईमानदार
Honourable	आदरणीय
Hope	आशा
Humanity	मानवता

Humble	विनम्र
Hunger	भूख
Hypocrite	धूर्त
Idle	बेकार
Ignorance	मासूमियत
Ignore	ध्यान न देना
Illusion	इन्द्रजाल, माया
Image	परछाई
Imagination	कल्पना
Imparted	प्रदान करना
Impious	श्रद्धाहीन
Important	आवश्यक
Incentive	प्रोत्साहन
Inclined	झुकाव
Individual	व्यक्ति

Indolence	आलस्य
Indomitable	अजेय, अदम्य
Indulgence	अतिसवन, आसक्ति
Infallible	अचूक, जो कभी असफल न हो
Injury	आघात, घाव
Innocence	मासूम
Intellectual	बुद्धिजीवी
Intelligent	बुद्धिमान
Intruding	घुस जाना
Invention	खोज
Iron will	दृढ़ - संकल्प
Knowledge	ज्ञान
Labour	परिश्रम
Language	भाषा
Laugh	हँसना

Laws	कानून
Lethargy	आलस्य
Liberty	आज़ादी
Life	जीवन
Limit	सीमा, हद
List	सूची
Loit	आवारा घूमना
Loom	करधा
Lord	मालिक
Loss	हानि
Loyalty	वफादारी, स्वामी - भक्ति
Luck	भाग्य
Ludicrous	हास्यप्रद
Manifestation	अभिव्यंजना, स्पष्टीकरण
Manner	आदत, तमीज़

Materialism	भौतिक
Merege	विलीन, संयुक्त
Mind	मन
Mirror	दर्पण
Miserable	दु:खदायी
Miseries	दु:ख
Misfortune	अभाग्य
Mistake	गलती
Momentary	क्षणिक, पलभर की
Moral	नैतिक
Mortal	नश्वर
Moths	कीड़ा (कपड़ा खाने वाला)
Motive	उद्देश्य
Mountains	पर्वत
Multiplication	गुणा देना

Mutually	समझौता
Negative	नकारात्मक
Nationality	राष्ट्रीयता
Necessities	आवश्यकताएँ
Necessity	आवश्यकता
Needy	जरूरतमंद
Negotiation	संधिवार्ता
Neighbour	पड़ोसी
Noblest	विनम्र
Non-co-operation	असहयोग
Nothing	कुछ भी नहीं
Obstacle	बाधा
Opinion	राय, मत
Organised	व्यवस्था करना
Palace	महल

Parents	अभिभावक
Particular	विशेष
Passion	मनोभाव, आवेश
Patience	धैर्य
Patient	रोगी
Patriotism	देशभक्ति
Peasant	मजदूर
Perfume	इत्र
Perish	समाप्त होना
Physical	शारीरिक रूप
Physique	शारीरिक
Pillar	स्तूप
Plan	योजना
Pleasure	प्रसन्नता
Poem	कविता

Political	राजनैतिक
Politness	विनम्रता
Positive	सकारात्मक
Poverty	गरीबी
Powerful	शक्तिशाली
Praise	गुणगान
Precious	कीमती
Presence	उपस्थिति
Prison	कैद
Probability	सम्भावनाएँ
Process	प्रक्रिया
Profession	व्यवसाय
Progress	उन्नति
Proletariat	श्रमजीवी, सर्वहारावर्ग
Propagation	संचरन, प्रसारण

Prophecy	भविष्यवाणी
Punish	सज़ा
Purposes	प्रयोजन, उद्देश्य
Pursuit	अनुसरण
Quarrel	लड़ाई झगड़ा
Radiant	प्रकाशमय, उज्ज्वल
Radical	उग्रवादी, अतिवादी
Rash	क्रोध
Ready	तैयार, आरम्भ
Realization	आत्मज्ञान
Recall	वापिस बुलाना
Reconcile	मेल मिलाप
Reduction	लघुकरण
Reflect	चिंतनशील, विचारशील
Religion	धर्म

Remedy	इलाज़
Remembrance	याद
Renunciation	त्याग
Renunciation-self	आत्मत्याग
Reptiles	रेंगनेवाला जीव
Required	आवश्यकता
Resemble	मिलता जुलता, समान होना
Respiration	सांस लाना
Retain	सुरक्षित, रखना
Revealed	प्रचारित, व्यक्त करना
Revenge	बदला लेना
Revolt	बगावत
Rich	अमीर
Ridiculous	हास्यप्रद, बेतुका
Righteousness	धर्मात्मा

Ruling	शासना करना
Sacrifice	बलिदान
Satisfied	संतुष्ट
Scare	निराधार - आतंक
Secret	कमज़ोरी
Secretly	गुप्त रूप से
Selfishness	स्वार्थपन
Selftrust	आत्म - विश्वास
Senseble	विवेकशील, तर्क संगत
Silent	खामोश
Sin	पाप
Sink	डूबना
Sinner	पापी
Skilful	निपुण, कुशल
Smooth	समतल, शाँत, मुलायम

Socialable	सामाजिक
Soul	आत्मा
Sparks	चिंगारियां
Spiritual	आध्यात्मिक
Startle	चौंकाना
Stimulus	उत्तेजना
Stir	भड़कना
Straight	सीधी
Stranger	अजनबी
Strictly	अनुशासित
Stride	कदम
Stringer	डोरी, फीता, तन्तु
Strong	मज़बूत
Struggle	संघर्ष
Stupidity	मूर्खता, बेवकूफी

Sublime	प्रभावशाली, प्रतापी
Succeed	सफलता
Sudden	अचानक
Suddenly	अचानक से
Suffering	मुसीबतें
Sufficient	काफी
Superior	महान
Support	सहारा
Sure	निश्चय रूप से
Swallowed	निगलना
Sword	तलवार
Sympathetic	सहानुभूत
Talent	प्रतिभा
Teaching	पढ़ाना
Temper	स्वभाव

Temptation	जिज्ञासा
Thief	चोर
Thorns	काँटे, शूल
Traditional	पारम्परिक
Tragedy	हादसा
Tranquillizer	शाँत करने वाला
Transmission	संचारण
Trust	भरोसा
Truth	सच्चाई
Ugly	कुरूप
Unavoidable	जिसको टाला न जा सके
Understand	समझना
Understanding	समझदारी
Un-educated	निरक्षर
Unmanifest	अव्यक्त

Unselfish	नि:स्वार्थ
Valiant	प्रचंड, शूरवीर, उग्र
Vanish	लुप्त हो जाना, गायब होना
Vessel	पात्र
Vice	उप
Vicious	अनैतिक, द्वेषपूर्ण
Victory	विजय
Vigorous	जोश
Violence	हिंसा
Virtue	वफादारी, सदाचार
Vise	चक्रिल सीढ़ी, शकंजा
Visible	प्रत्यक्ष, जो दिखाई दे
Vitality	स्फूर्ति
Voice	आवाज़
Void	उपयोगहीन, व्यर्थ

Voluntary	स्वेच्छक
Wages	वेतन, पारिश्रमिक
Wail	क्रन्दन
Wants	इच्छाएँ
Warmth	मैत्री - भाव
Waste	व्यर्थ
Weak	कमज़ोर
Weapon	हथियार
Wear	पहनना
Weaving	कपड़ा बुनना
Wickedness	धूर्तता
Wisdom	बुद्धि
Wise	बुद्धिमान
Witness	गवाही
Wonder	आश्चर्य, चमत्कार

Words Meaning

Wood	लकड़ी
Workshop	कार्यशाला
Worm	कीड़ा (लकड़ी खाने वाला)
Worshipping	पूजा करना
Wounds	जख्म, आघात
Wrath	क्रोध

लेखन एवं प्रकाशन

'अमिटशब्द' काव्य-संग्रह, अप्रैल (1999)

'धरा के लिए' हाइकु-संग्रह फरवरी (2004)

'योजना' (मासिक)

'शीराज़ा' (मासिक)

'कश्मीर-टाइम्स

'मसि-कागद'

'चन्द्रभागा-संवाद'

'संकल्प'

'समाचार क्रान्ति' (कोलकाता)

'नारी अस्मिता' (गुजरात)

इत्यादि में रचनाओं का प्रकाशन, दूरदर्शन केन्द्र जम्मू तथा रेडियो कश्मीर जम्मू से प्रसारण ।

डॉ० निर्मल ऐमा

जन्म स्थान : श्रीनगर (जम्मू - कश्मीर)

परिवार : श्री दुलारी ऐमा (माता श्री), श्री बृजनाथ ऐमा (पिता श्री)
श्री प्यारे लाल मानवती (पति श्री)
सुपुत्र आशुतोष
सुपुत्री अंशुमाली

व्यवसाय : अध्यापिका

शिक्षा : एम० ए० (हिन्दी) कश्मीर विश्वविद्यालय
एम० एड०, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समर - हिल (शिमला)
पत्रकारिता : भारतीय विद्या - भवन, मुम्बई

Ph. D., Panjab University, Chandigarh (Education)

शोधकार्य :

1. A study of Mental Health Among Teachers in Relation to Teacher Effectiveness. (1995-96)
2. News Paper Reading Habits of Teenagers in Relation to Academic Achievement in English (1997)
3. A Studying of School Climate and its Relationship with Creativity, Personality and Academic Achievement of Adolescents (2000).

सम्मान

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा - उत्तर प्रदेश द्वारा 'कवयित्री महादेवी वर्मा सम्मान' से सम्मानित;
'जैमिनी अकादमी' पानीपत के द्वारा 'आचार्य' की उपाधि से सम्मानित,
श्री सोहन लाल द्विवेदी जन्मदिवस समारोह पर पानीपत से विशेष पुरस्कार से सम्मानित ।